उत्तरांचल में लघु उद्योग के विकास की सम्भावना

(रिंगाल उद्योग का विशिष्ट अध्ययन)

प्रताप सिंह गढ़िया

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
सेक्टर "ओ" अलीगंज हाउसिंग स्कीम
लखनऊ-226 024

1999

उत्तरांचल में लघु उद्योग के विकास की सम्भावना

(रिंगाल उद्योग का विशिष्ट अध्ययन)

प्रताप सिंह गढ़िया

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
सेक्टर "ओ" अलीगंज हाउसिंग स्कीम
लखनऊ - 226 024

1999

आभार

हिमालय के समीप निवास करने वाले उत्तराखण्डी लोगों को आय व रोजगार मुहैय्या कराने वाले " रिंगाल उद्योग" का आज तक विस्तृत अध्ययन नहीं हो पाया था। गिरि विकास अध्ययन संस्थान के संकाय सदस्यों, विशेषकर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर जी.पी. मिश्रा ने इस अध्ययन को करने के लिये आर्थिक सहायता प्रदान की जिसके लिये मैं उनका आभारी हूं।

इस अध्ययन को पूरा करने में मैं असमर्थ रहता यदि मेरे गुरु जी प्रोफेसर अजीत कुमार सिंह जी अपने शोध अध्ययन में कार्यरत शोध सहायकों- श्री बालासिंह कोरंगा, श्री एस.के. त्रिवेदी, श्री कुंवर सिंह देवली तथा श्री मनमोहन कुमार गुप्ता के माध्यम से आंकड़ों के विश्लेषण में सहायता नहीं पहुंचाते। मैं संस्थान में अपने वरिष्ठ सहयोगियों - डा० आशुतोष जोशी, डा० योगेन्द्रपाल सिंह, डा. गोविन्द सिंह मेहता तथा डा० पूर्णानन्द जी का भी आभारी हूं जिन्होंने न केवल शोध अध्ययन में अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये वरन् अध्ययन में वांछित त्रुटियों को दूर करने की सलाह भी प्रदान की।

मैं स्थानीय अन्वेषक के रूप में कार्यरत श्री प्रेम सिंह टाकुली, श्री सुन्दर सिंह गढ़िया व श्री खुशाल सिंह गढ़िया का भी आभारी हूं जिन्होंने 15-20 कि.मी. पैदल चलकर आंकड़ों के संग्रहण में अपनी जिम्मेदारी निभायी। अन्त में मैं श्रीमती गीता बिष्ट का भी आभारी जिन्होंने इस अध्ययन के टंकण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ
मार्च 10, 1999

प्रताप सिंह गढ़िया

विषय सूची

अध्याय-1

प्रस्तावना एवं उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना :

हिमालय क्षेत्र अपनी अतिशय स्थानिक भिन्नता एवं भौगोलिक पारिस्थितिकीय वैशिष्ट्य के कारण प्राचीन काल से प्राय: एक कौतूहल का विषय बना है। यह स्वाभाविक है कि ऐसे क्षेत्र में जनजीवन का प्रारूप भी तद्नुसार विशिष्ट एवं भिन्नता युक्त होगा। प्राकृतिक रूप से हिमालय क्षेत्र का अधिकांश भाग मनुष्य के बसने के लिये उपयुक्त न होने के कारण जनसंख्या की उपस्थिति नदी, घाटियों अपेक्षाकृत कम ढलान वाले पहाड़ी क्षेत्रों व समतल पहाड़ी श्रृंखलाओं तक ही सीमित है। धरातलीय बनावट के साथ साथ अनेक भौगोलिक कारकों जैसे संसाधनों की उपलब्धता, अनुकूल जलवायुविक स्थितयों आदि के कारण भी जनसंख्या वितरण का प्रतिरूप प्रभावित एवं परिसीमित हुआ है।

भारत वर्ष में स्थित हिमालयी क्षेत्र (जम्मू एवं कश्मीर, हिमांचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, पशिचमी बंगाल (पर्वतीय) असम (पर्वतीय) अरुणांचल प्रदेश, नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर तथा मेघालय का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5,47,722 वर्ग किलोमिटर है जिसके कुल 59,924 आबाद ग्रामों व 345 नगरों में 3,77,80,370 जनसंख्या निवास करती है । जो भारत की जनसंख्या व क्षेत्रफल का क्रमश: 4.5 प्रतिशत व 16.7 प्रतिशत है ।

यद्यपि हिमालय क्षेत्र सबसे कम आबादी वाला क्षेत्र रहा है लेकिन यदि अतीत की ओर दृष्टि डाली जाय तो इस क्षेत्र की जनसंख्या में नि:संदेह महत्वपूर्ण वृद्धि दृष्टिगोचर होती है विशेषत: स्वतंत्रता के बाद । सन् 1901 में हिमालय क्षेत्र में लगभग 80 लाख जनसंख्या निवास करती थी जो 1951 में 120 लाख तथा 1991 में 378 लाख हो गयी है। इस तरह पिछले 90 वर्षों में हिमालय क्षेत्र की जनसंख्या में चारगुने से अधिक वृद्धि हुई है।

हिमालय क्षेत्र में चौगुनी से अधिक जनसंख्या वृद्धि का अधिकतर भार कृषि पर पड़ा है । कृषि में जनसंख्या का अधिक भार पड़ने के कारण कृषक पर्याप्त भोजन वस्त्र व अन्य आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अपने को असमर्थ पाते है और गरीबी में अपना जीवन यापन करने को विवश हैं।

भारत के सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र की तरह उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र उत्तराखण्ड की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या भी वर्तमान समय में कृषि में लगी हुई है लेकिन कृषि इस क्षेत्र में न आय का मुख्य स्त्रोत रहा है और न ही भविष्य में मुख्य स्त्रोत बने रहने की सम्भावना है। यह बात स्पष्ट हो गयी है कि उत्तराखण्ड में कृषि न केवल अनार्थिक है वरन् चट्टानों व अधिक ऊचाँई वाले पर्वतीय

भू-भाग में अलाभकारी भी है तथा अब इस क्षेत्र में कृषि विकास व विस्तार की सम्भावनाएं नगण्य रह गयी है। आधुनिक कृषि तरकि के सम्बन्ध में ज्ञान का अभाव, लहराता धरातल, सिंचाई के साधनों का अभाव तथा भूमि की छो टी-2 जोतें कृषि उत्पादकता वृद्धि में बाधक बने हुए हैं।

उत्तराखण्ड क्षेत्र में कृषि अनार्थिक होने के साथ साथ कृषक को वर्ष भर रोजगार उपलब्ध कराने में भी असमर्थ रहा है इस सम्बन्ध में गढ़िया §1994§ तथा जलाल §1991§ ने भी पाया है कि उत्तराखण्ड क्षेत्र का एक कृषक वर्ष में मात्र 6-7 माह तक ही कृषि में कार्य पाता है। भूमि जोत के आधार पर छोटी जोत का कृषक 136, दिन मध्यम जोत का 172 दिन व बड़ी जोत का कृषक वर्ष में कुल 210 दिन तक रोजगार पाता है और अपने पूरे वर्ष में परिवार के लिये औसतन दो-तिहाई अनाज पैदा कर पाता है और शेष महिनों के लिये मैदानी क्षेत्र से अनाज मंगाकर अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं।

माधव आशीष §1979§ ने भी लिखा है कि आज पर्वतीय क्षेत्र में कृषक औपचारिक रूप से कृषि में व्यस्त रहकर अपने समय की बर्बादी कर रहे हैं। बहुत से अध्ययन ग्रुप, अर्थषशास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता आज इस बात पर जोर देते है कि पर्वतीय क्षेत्र में कृषि विकास कार्यक्रमों को रोका जाय और जीवन निर्वाह के अन्य स्त्रोतों को खोजा जाय।

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र में जहाँ कृषि विकास की सम्भावनाएं नगण्य है वहीं दूसरी ओर बड़े व मध्यम उद्योगों को आवश्यक अवस्थापनाओ की कमी स्थानीय साहसियों की कमी व उनके प्रबन्धकीय ज्ञान के अभाव, कच्चे माल की अनुलब्धता व वित्तीय समस्याओ के साथ-साथ पर्यावरणीय प्रदूषण के खतरों के कारण पर्वतीय सम्भाग में स्थापित करना असम्भव व दुष्कर कार्य है यद्यपि उत्तराखण्ड के तराई सम्भाग में बड़े उद्योगों को स्थापित करने की पर्याप्त सम्भावनाएं विद्यमान हैं।

अतः कृषि के अनार्थिक होने व बड़े उद्योगों की स्थापना न हो पाने की स्थिति में लघु एव कुटीर उद्योग पर्वतीय क्षेत्र के लोगों के आय व रोजगार के स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी कहा है कि "यदि हम भारत में ग्रामीण जीवन को पुनर्जीवित करना चाहते हैं, यदि हम भारत के सम्मुख उपस्थित भयंकर बेरोजगारी की समस्या का हल ढूंढना चाहते हैं तो वह सब देश के गिने चुने क्षेत्रों में भारी उद्योगों की स्थापना से सम्भव न होगा बल्कि देश के सभी क्षेत्रों में कुटीर एवं लघु उद्योगों के समान वितरण एवं स्थापना से ही सम्भव हो सकता है।

पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति जहां कृषि व वृहत् उद्योगों के लिये अनुपयुक्त है वहीं दूसरी ओर कुछ विशिष्ट उद्योगों के लिये विशेषता प्रदान करती है। ठण्डी जलवायु, धूल रहित वातावरण, शहरों के कोलाहलपूर्ण जीवन की अनियमितताओ से दूर जैसे कई ऐसे पहलू है जो कि पर्वतीय क्षेत्रों में लाभ प्रद उद्योग स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं। यह भी सर्वविदित है कि किसी उद्योग की स्थापना उस स्थान विशेष पर होती है जहां की जलवायु, कच्चे माल की उपलब्धता, बाजार की निकटता, परिवहन व संचार सुविधाएं एवं सरकारी नीति उस उद्योग के अनुरूप हो। चूंकि पर्वतीय

क्षेत्र में स्थानीय संसाधनों पर आधारित अनेक लघु एवं कुटीर उद्योग विद्यमान है जो मुख्यतया वन, पशुपालन, कृषि, खनन व इलैक्ट्रानिक पर आधारित है।

वनों पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों में फर्नीचर उद्योग, आरा मशीन, कागज, विरौजा, जड़ी बूटियों से दवा व रंग बनाना, चीड़ के छिलके व फलों से अनेक सजावटी सामान बनाना, बांज व शहतूत के पेड़ों से रेशम व टसर उत्पादन, बुरांस के फूलों से शर्बत, रिंगाल से चटाइयाँ, टोकरी, ड्बक, सूपा, बाक्स, तेहत, टोप आदि उत्पाद बनाने के उद्योग विद्यमान है। भेड़ बकरी व अंगूरी खरगोशों से ऊन उद्योग, व डेयरी उद्योग चलाये जा रहे है। कृषि व बागवानी से सम्बन्धित लघु एवं कुटीर उद्योगों में फूलों की खेती, चाय के बागान, जाम, जैली, आचार, मुरब्बा व शरबत बनाना तथा मशरूम की खेती अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं इसके अलावा रांबास व भंगेले की रस्सियाँ, जानवरों को बांधने की डोरी, भोला व चटाई बनाने का कार्य पर्वतीय क्षेत्र में लगभग सभी भागों में होता है। खनन से सम्बिन्धत उद्योग यद्यपि पर्वतीय क्षेत्र में विकसित नहीं हो पाये हैं लेकिन ताम्र व बालू मौरंग का व्यवसाय स्वयं एक उद्योग का रूप ले चुका है इसके अलावा खड़िया का पाउडर व मूर्तियाँ बनाने का कार्य भी खड़िया उपलब्ध होने वाले स्थानों में किया जाने लगा है। जलवायु की उत्कृष्टता के कारण अनेक इलैक्ट्रोनिक उद्योग जैसे - घड़ियाँ, टेपरिकार्डर, टेलीविजन, व ट्रांजिस्टर बनानें के उद्योग उत्तराखण्ड क्षेत्र में विद्यमान हैं। उत्तर प्रदेश राज्य नियोजन संस्थान की सांख्यिकी डायरी (1995) के अनुसार उत्तराखण्ड क्षेत्र में लघु उद्योग क्षेत्र में खादी उद्योग की लगभग 45.0 प्रतिशत, हस्तकला 18.0 प्रतिशत तथा लगभग 9.0 प्रतिशत ईकाइयाँ हथकरघा क्षेत्र में विद्यमान है तथा शेष 28.0 प्रतिशत ईकाइयाँ इंजीनियरिंग, रसायन, खाद्य, प्रसंस्करण रेशम व अन्य उद्योगों की ईकाइयां हैं।

तालिका संख्या 1.1 में राज्य नियोजन संस्थान की सांख्यिकी पत्रिका व उद्योग निदेशालय, कानपुर से उपलब्ध संग्रहीत आंकड़ों को दर्शाया गया है। सन् 1990-91 में उत्तराखण्ड में कुल 28486 लघु उद्योग ईकाइयाँ थी जिसमें 58391 लोग कार्यरत थे। रोजगार व लघु इकाइयों की संख्या के अनुसार नैनीताल जिला प्रथम व अल्मोड़ा व देहरादून क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान पर देखे गये है। सन् 1993-94 में उत्तराखण्ड में घरेलू उद्योग में 43726 लोग कार्यरत थे और घरेलू उद्योगों की संख्या 24416 थी।

यद्यपि वर्तमान समय में उत्तरांचल में ऊन, ताम्र व रिंगाल जैसे पारम्परिक स्थानीय संसाधनों पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग स्थानीय ग्रामीण भूमिहीन व सीमान्त कृषकों को रोजगार व आय अर्जित करने में अपना योगदान दे रहे हैं लेकिन अच्छे कच्चे माल की कमी होने, बाजार की समस्या, नयी तकनीकी ज्ञान के अभाव तथा पारम्परिक कारीगरों द्वारा रोजगार के अन्य विकल्पों की तलाश में रहने के कारण इन पारम्परिक उद्योगों में ह्रास की प्रवृति देखी जा सकती है। पारम्पारिक लघु एवं कुटीर उद्योगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से भी ज्ञात होता है कि अंग्रेजों के शासन काल में ही इन उद्योगों में ह्रास की प्रवृति की शुरुआत हो गयी थी और लोग वैकल्पिक रोजगार की तलाश करने लगे थे।

तालिका संख्या 1.2

उत्तराखण्ड में लघु एवं घरेलू उद्योगों की संख्या व रोजगार की स्थिति

जिला	उद्योग निदेशालय में रजिस्टर्ड लघु उद्योगों की संख्या व रोजगार 1990-91		घरेलू उद्योग 1993-94	
	इकाई संख्या	रोजगार	इकाई संख्या	रोजगार
उत्तरकाशी	2365	4153	3456	6677
	(8.30)	(7.11)	(14.15)	(15.27)
पौड़ी	1740	6958	2027	3063
	(6.11)	(11.92)	(8.31)	(7.00)
चमोली	2556	3714	1597	2797
	(8.98)	(6.36)	(6.54)	(6.40)
टेहरी	219	730	2379	4352
	(0.77)	(1.25)	(9.74)	(9.95)
देहरादून	2844	11540	2017	3684
	(9.98)	(19.76)	(8.26)	(8.43)
अल्मोड़ा	3933	12917	4412	8193
	(13.81)	(22.12)	(18.02)	(18.74)
नैनीताल	13705	16225	5556	9993
	(48.11)	(27.79)	(22.76)	(22.85)
पिथौरागढ़	1124	2154	2972	4967
	(3.95)	(3.69)	(12.17)	(11.36)
उत्तराखण्ड	28486	58391	24416	43726
	(100.00)	(100.00)	(100.00)	(100.00)

स्रोत :- जी. एस. मेहता, माउण्टेन इन्टरप्राइजेज एण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर, ए डिस्कशन पेपर सीरीज नं० एम.ई.आई. 97/4, इन्टरनेशनल सेन्टर फॉर इन्टीग्रेटेड माउण्टेन डेवलपमेंट, काठमाण्डू, नैपाल, 1997.

आजादी के उपरान्त पारम्परिक उत्पादों को आधुनिक तकनीक से अधिक मात्रा में उत्पादित करने व पारम्परिक उत्पादों के वैकल्पिक उत्पाद बनाने की होड़ लगी है। यद्यपि सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अनुदान देकर इन उत्पादों को बनाये रखने का प्रयास किया है लेकिन ये उत्पाद प्रतियोगिता में नहीं टिक पा रहे है। इधर उपभोक्ताओं के शौक में भी अन्तर आने के

कारण पारम्परिक हस्तकला के कारीगर अपने उत्पादों में परिवर्तन लाने में असमर्थ रहे है, दूसरी तरफ तुलनात्मक रूप में हस्तकला जैसे उद्योगों में अधिक आय अर्जन करने की क्षमता कम होने के कारण हस्त कला के कारीगर दूसरे व्यवसायों को करने में मजबूर होते जा रहे है ।

अतः पारम्परिक उद्योगों का हास वर्तमान परिदृश्य में एक विचारणीय विषय बन गया है क्योंकि पारम्परिक शिल्पकला व हस्तकला में लगे कुशल कारीगर धीरे धीरे अदृश्य हो जायेगें जबकि यह पारम्परिक उद्योग पूंजी के न्यून अंश से ग्रामीण परिवारों को बिना स्थान बदले अथवा प्रयास किये रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि कुटीर व पारम्परिक उद्योग ग्रामीण अंचल के बेरोजगारों को कार्य, अर्धबेरोजगारों को अधिक कार्य व मौसमी बेरोजगारों को पूर्णकालिक कार्य प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। उत्तराखण्ड क्षेत्रमें अधिकतर कार्य का बोझ स्त्रियों के कन्धों पर रहता है जिस परिवार में भूमि जोत नगण्य है या थोड़ी बहुत जमीन है उस परिवार की स्त्रियां वर्ष भर कार्य नहीं पाती है इसलिये पारम्परिक उद्योगों को उनके पक्ष में विकसित करना उचित होगा दूसरी तरफ पारम्परिक उद्योगो को देशी तकनीक व स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता पर ही विकसित किया जा सकता है। यद्यपि रोजगार व आय अर्जन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण उद्योग होने पर भी पारम्परिक उद्योगों के विकास में ठहराव व हास की प्रवृति दृष्टिगोचर होने लगी है। उत्तराखण्ड के पारम्परिक उद्योगों में रिंगाल उद्योग (ARUNDNACEA FESTUCA) अपना विशिष्ट स्थान रखता है अतः आय व रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण पारम्परिक रिंगाल उद्योग हमारे अध्ययन का मुख्य भाग है।

1.2 अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत रिंगाल उद्योग का अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित रहा है।

1. रिंगाल उद्योग में लगे लोगों के आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन ।
2. रिंगाल के विभिन्न उत्पादों व उसके उत्पादन में अपनायी गयी तकनीक का अध्ययन ।
3. कच्चेमाल की उपलब्धता व बाजार की स्थिति का अध्ययन ।
4. रिंगाल उद्योग की समस्यायें व सम्भावनाएं।

1.3 अध्ययन पद्धति व प्रतिदर्श आकार

रिंगाल जो कि बांस की प्रजाति की वनस्पति है, को समुद्र सतह से 1100 मीटर से अधिक की ऊचांई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। यद्यपि 1200 मीटर से 2100 मीटर तक की ऊचांई वाले क्षेत्रों में ग्रामीण अंचल के कुछ लोगों द्वारा अपने खेतों में अपनी आवश्यकता के उत्पाद बनाने के लिये को रिंगाल को उगाया जाता हैं लेकिन 2100 मीटर से अधिक की ऊचांई के वनों में यह स्वतः उगने वाली वनस्पति है। साधारणतया वनों में उगने वाला रिंगाल उत्तराखण्ड के पश्चिम

में उत्तरकाशी से लेकर पूर्व में पिथौरागढ़ तक के वनों में पाया जाता है लेकिन जो जिले हिमालय से जुड़े हुए है उनमें इनका उत्पादन अधिक होता है। अतः हिमालय से जुड़े उत्तरकाशी, चमोली, बागेश्वर तथा पिथौरागढ़ जिलों में भी बागेश्वर जिले में रिंगाल का उत्पादन सबसे अधिक होता है। इसलिये बागेश्वर जिले को अध्ययन के लिये चुना गया। विकास खण्ड के चयन में भी रिंगाल उत्पादन व रिंगाल के उत्पाद बनाने वाले ईकाइयों अथवा परिवारों को ध्यान में रखा गया है चूंकि बागेश्वर जनपद का एक मात्र विकास खण्ड - कपकोट हिमालय से जुड़ा है और हिमालय से जुड़े अधिकतर गांवों में रिंगाल का कारोबार होता है इसलिये विकास खण्ड कपकोट का चयन किया गया।

गांवों के चयन के लिये सर्वप्रथम खण्ड विकास अधिकारी से पूरे विकास खण्ड के गांवों की सूची मांगी गयी और खण्ड विकास अधिकारी व अन्य कर्मचारियों तथा स्थानीय लोगों से पूछताछ कर जिन गांवों में रिंगाल का काम अधिक होता है उन गांवों (सूपी, खलभूनी, मिकिला खलपटा, हरकोट व लाहूर) का चयन किया गया। गांव के चयन के बाद गांव के प्रधान से रिंगाल उद्योग में लगे परिवारों की सूची तैयार की गयी और उस सूची में से बिना व्यवस्था निर्देशन किया गया और प्रत्येक गांव से 10 उद्यमियों अर्थात् कुल 50 उद्यमियों का चयन इस अध्ययन के लिये किया गया है।

1.4 अध्ययन क्षेत्र व उसकी विशेषताएं

प्रशासनिक दृष्टि से 12 जिलों व दो मण्डलों में विभाजित उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र (उत्तराखण्ड) हमारे अध्ययन का क्षेत्र रहा है। सन् 1991 की जनगणना के अनुसार पर्वतीय क्षेत्र का भौगोलिक क्षेत्रफल 51125 वर्ग कि0 मी0 है जिसके 6257 ग्राम पंचायतों में 59.3 लाख जनसंख्या निवास करती है। भारत के हिमालय क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल का 9.3 प्रतिशत भाग उत्तराखण्ड का है जबकि सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र की जनसंख्या का 15.6 प्रतिशत भाग उत्तराखण्ड में है। उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या में 16.7 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 3.5 प्रतिशत लोग अनुसूचित जनजाति के है। उत्तराखण्ड की लगभग 78.0 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और जनसंख्या छितकारी होते हुए भी जनसख्या का घनत्व 116 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि0मी0 है। उत्तराखण्ड में सन् 1981 से 1991 में जनसंख्या में 2.3 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर देखी गयी है। जहां तक साक्षरता का प्रश्न है। उत्तराखण्ड के 59.6 प्रतिशत लोग शिक्षित है जिसमें से पुरुष वर्ग का 75.5 प्रतिशत व स्त्री वर्ग का 42.9 प्रतिशत भाग शिक्षित है। उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या का 36.0 प्रतिशत भाग मुख्य कर्मकरों के रूप में विद्यमान है। उत्तराखण्ड के कुल मुख्य कर्मकरों में से लगभग 65.0 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में संलग्न है तथा लगभग 5.0 प्रतिशत मुख्य कर्मकर पारिवारिक व गैर पारिवारिक उद्योगों में लगे हैं शेष मुख्य कर्मकर पशुपालन वन, खनन, यातायात व अन्य कर्मकारों के रूप में संलग्न हैं।

रिंगाल उद्योग से सम्बन्धित हमारे अध्ययन का क्षेत्र उत्तराखण्ड में पिछले वर्ष नवसृजित जिला बागेश्वर है जो पिछले वर्ष तक जनपद अल्मोड़ा का एक भाग था लेकिन जनपद बागेश्वर के

सामाजिक व आर्थिक आंकड़े अलग से उपलब्ध न होने के कारण चयनित विकास खण्ड – कपकोट के सामाजिक व आर्थिक आंकड़ों का विश्लेषण इस भाग में किया गया है और यदा-कदा आवश्यकतानुसार जनपद अल्मोड़ा के आंकड़ों से तुलना की गयी है।

जनपद-बागेश्वर के हिमालय से जुड़े व पर्यटन की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान बनाये विकास खण्ड कपकोट-पुंगर, कनलगढ़, पिण्डर, शामा व सरयूघाटी में बंटा हुआ है जिसमें दो कानूनगों क्षेत्र तथा 12 न्याय पंचायतें हैं । सन् 1991 की जनगणना के अनुसार विकास-खण्ड-कपकोट का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 593.5 वर्ग कि0मी0 तथा इसके 201 आबाद गांवों में कुल 70407 लोग निवास करते हैं। जो जनपद अल्मोड़ा के भौगोलिक क्षेत्रफल का 7.1 प्रतिशत व जनसंख्या का 8.4 प्रतिशत है। विकास खण्ड की कुल जनसंख्या में 22.4 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की है। पूरे उत्तराखण्ड (116 व्यक्ति) की तरह विकास खण्ड कपकोट की जनसंख्या का घनत्व भी मात्र 118 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। स्त्री पुरुष अनुपात 1043 है। विकास खण्ड की कुल जनसंख्या में 46.8 प्रतिशत (अल्मोड़ा 58.6 प्रतिशत) लोग शिक्षित हैं। यद्यपि पुरुषों की साक्षरता दर 71.0 प्रतिशत व स्त्रियों की साक्षरता दर 24.2 प्रतिशत है लेकिन अल्मोड़ा जनपद के सभी विकास खण्डों में शैक्षिक दृष्टि से यह विकास खण्ड सबसे पिछड़ा हुआ है।

विकास खण्ड कपकोट के 85.2 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में संलग्न है जबकि पारिवारिक उद्योग में 1.7 प्रतिशत कर्मकर व शेष मुख्य कर्मकर गैर पारिवारिक उद्योग, खनन, वन, पशुपालन व अन्य कर्मकर के रूप में कार्यरत है। विकास खण्ड कपकोट प्राकृतिक व वन सम्पदाओं के सम्बन्ध में सम्पन्न हैं। सन् 1993-94 के आंकड़ों के अनुसार कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 73.7 प्रतिशत (अल्मोड़ा 54.0 प्रतिशत) भाग में वनों का होना इसका स्पष्ट प्रमाण है लेकिन प्रतिवेदित क्षेत्रफल का मात्र 5.5 प्रतिशत भाग (अल्मोड़ा 14.0) की शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के अन्तर्गत है जो पूरे उत्तराखण्ड व अल्मोड़ा के शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल का आधे से भी कम है। विकास खण्ड कपकोट के सरयू घाटी में स्थित हमारे चयनित पांचों गांवों का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7334 एकड़ है जिसमें कुल 2604 लोग निवास करते हैं! चयनित गांवों की कुल जनसंख्या में लगभग 17.0 प्रतिशत लोग अनुसूचित जाति व 3.0 प्रतिशत लोग अनुसूचित जनजाति के हैं। कुल जनसंख्या में 42.0 प्रतिशत लोग शिक्षित है जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 65.0 प्रतिशत व स्त्री साक्षरता दर मात्र 21.0 प्रतिशत है।

सन् 1991 की जनगणना के अनुसार हमारे चयनित गांवों के 80 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में तथा 3.0 प्रतिशत कर्मकर पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत है शेष मुख्य कर्मकर अन्य व्यवसायों में लगे हैं। हमारे चयनित गांवों के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 70.0 प्रतिशत भाग में वन विद्यमान है जबकि लगभग 10.0 प्रतिशत भाग शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल के अन्तर्गत आता है।

हिमालय क्षेत्र जिसमें छितरायी हुई जनसंख्या निवास करती थी उसमें एक शताब्दी में जनसंख्या में लगभग 5 गुने वृद्धि हुई है और इस बढ़ती जनसंख्या का भार कृषि में ही अधिक पड़ा है और

कृषि में ही लोगों के रोजगार के अवसर बने रहने के कारण उनकी गरीबी जस की तस बनी हुई है। सम्पूर्ण हिमालया क्षेत्र की तरह उत्तराखण्ड के हिमालय क्षेत्र में भी कृषि ही लोगों को रोजगार देने का मुख्य व्यवसाय रहा है लेकिन एक उत्तराखण्डी कृषक वर्ष में मात्र 6-7 माह तक ही कृषि में रोजगार पाता है और अपनी आवश्यकता के दो तिहाई अनाज कृषि कार्य से पाता है शेष अनाज की भरपाई मैदानी क्षेत्रों से अनाज का आयात करके किया जाता है।

जहाँ उत्तराखण्ड का सम्पूर्ण कृषक समाज मात्र 6.7 माह तक ही रोजगार पाता है वहीं दूसरी ओर जिनके पास थोड़ी सी जमीन है या भूमिहीन हैं व्यवहार में आज उनके लिये वैकल्पिक रोजगार की आवश्यकता बनी हुई है, क्योंकि वर्तमान में इस वर्ग के लोग आधुनिक विकास के लाभ को अर्जित करने में असफल रहे हैं और विकल्प के रूप में क्षेत्र में जो भी पारम्परिक उद्योग विद्यमान है उसमें रोजगार व आय की आस लगाये हैं क्योंकि ये पारम्परिक उद्योग न केवल पुरुष वर्ग को रोजगार उपलब्ध कराते हैं वरन् स्त्रियां व बच्चे भी इन पारम्परिक उद्योगों में कार्यरत रहकर पारिवारिक आय का सृजन कर सकते है, लेकिन विगत कुछ वर्षों से पारम्परिक उद्योगों में ह्रास की प्रवृति देखी गयी है क्योंकि कृषि की भांति पारम्परिक उद्योग भी भूमिहीन व छोटी जोत वालों को रोजगार उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं और न ही उनके पारिवारिक आय में वृद्धि हो पा रही है वरन् लोग रोजगार के अन्य अवसरों की तलाश में हैं। अतः स्थानीय संसाधनों पर आधारित रिंगाल उद्योग में आय, रोजगार, कच्चे माल व बाजार की स्थिति, रिंगाल के विभिन्न उत्पाद, व उनके उत्पादन की तकनीक आदि का शोध कार्य इस अध्ययन में किया गया है।

अध्याय -2
प्रतिदर्श उद्यमियों की सामाजिक व आर्थिक विशेषताएं:

रिंगाल के विभिन्न उत्पादों को बनाने का कार्य हमारे चयनित गांवों के परिवारों में कई पीढ़ियों अथवा पुश्तों से किया जाता रहा है। कच्चे माल की व्यवस्था, विभिन्न उत्पादों को बनाने व उनके विपणन की व्यवस्था का कार्य साधारणतया परिवार के मुखिया द्वारा किया जाता है। अतः परिवार के मुखिया जो हमारे अधिकतर उत्तरदाता भी हैं को उद्यमी तथा परिवार के माध्यम से चलाये जाने वाले रिंगाल उद्योग को एक पारिवारिक उद्योग अथवा इकाई कहना उचित होगा। चूंकि रिंगाल उद्योग परिवार में चल रहे है। इसलिये उत्तरदाता (उद्यमी) व उसके परिवार की विशेषताओं का अध्ययन इस भाग में किया गया है।

2.2.1 जाति के आधार पर उद्यमियों का वर्गीकरण

साधारणतया उत्तराखण्ड क्षेत्र में यह धारणा बनी हुई है कि मध्यम ऊचांई वाले गांवों में अनुसूचित जाति का एक उपवर्ग संढ़िया या बाज्डी लोग ही घरेलू व जंगली रिंगाल के विभिन्न उत्पाद बनाते हैं लेकिन हमारे अध्ययन के लिये चयनित गांवों में यद्यपि अनुसूचित जाति व जनजाति के अधिकतर लोग रिंगाल उद्योग में लगे है लेकिन अन्य जाति के लोग भी रिंगाल उत्पाद बनाने में लगे हुए है। यद्यपि हमारे प्रतिदर्श चयन का आधार जाति न होने के कारण सभी गांवों में सभी जाति के उद्यमी नहीं आ पाये हैं।

तालिका संख्या 2.1
जाति के अनुसार उत्तरदाताओं उद्यमियों का वर्गीकरण

गांव का नाम	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	उच्चजाति	कुल
1. सूपी	10	-	-	10
	(100.00)			(100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	10	-	-	10
	(100.00)			(100.00)
3. लाहूर	-	-	10	10
			(100.00)	(100.00)
4. हरकोट	8	2	-	10
	(80.00)	(20.00)	-	(100.00)
5. खलमूनी	4	5	1	10
	(40.00)	(50.00)	(10.00)	(100.00)
कुल	32	7	11	50
	(64.00)	(14.00)	(22.00)	(100.00)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

तालिका संख्या 2.1 में जाति के आधार पर उद्यमियों का वर्गीकरण किया गया है। तालिका के अनुसार हमारे चयनित सभी गाँवों के 64.0 प्रतिशत उद्यमी अनुसूचित जाति, 14.0 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति व 22.0 प्रतिशत ऊँची जाति के उद्यमी हैं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि रिंगाल का कार्य करने वालों में बहुसंख्यक लोग अनुसूचित जाति व जनजाति के हैं।

2.2.2 आयु वर्ग के अनुसार उद्यमियों का वर्गीकरण

तालिका संख्या 2.2 में आयु वर्ग के अनुसार उत्तरदाताओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से ज्ञात होता है कि हमारे चयनित 66.0 प्रतिशत उद्यमियों की आयु 35 से 59 वर्ष तथा 22.0 प्रतिशत उद्यमी 20 से 35 वर्ष के युवा उद्यमी है जबकि 12.0 प्रतिशत उद्यमी 60 वर्ष से अधिक उम्र के हैं।

तालिका संख्या 2.2

आयु वर्गानुसार उत्तरदाता उद्यमियों का वर्गीकरण

गांव का नाम	20 35	35 59	60	कुल
1. सूपी	6	3	1	10
	(60.00)	(30.00)	(10.00)	(100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	2	8	–	10
	(20.00)	(80.00)		(100.00)
3. लाहूर	–	6	4	10
		(60.00)	(40.00)	(100.00)
4. हरकोट	3	6	1	10
	(30.00)	(60.00)	(10.00)	(100.00)
5. खलभूनी	–	10	–	10
		(100.00)		(100.00)
कुल	11	33	6	50
	(22.00)	(66.00)	(12.00)	(100.00)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

2.2.3 शिक्षा स्तर के अनुसार उद्यमियों का वर्गीकरण

हमारे चयनित सभी उद्यमियों में 28.0 प्रतिशत उद्यमी निरक्षर व 16.0 प्रतिशत साक्षर पाये गये हैं। शिक्षित उद्यमियों में भी 34.0 प्रतिशत उद्यमी मात्र प्राइमरी तक शिक्षा ग्रहण किये हुए हैं जबकि 18.0 प्रतिशत जूनियर व 4.0 प्रतिशत उद्यमी माध्यमिक तक शिक्षा पाये हैं। दशाब्दि पूर्व तक शिक्षण संस्थाओं का विकास न हो पाना इसके कारण रहे हैं।

तालिका 2.3
शिक्षा स्तर के अनुसार उद्यमियों का वर्गीकरण

गांव का नाम	अशिक्षित	साक्षर	प्राइमरी	जूनियर	माध्यमिक	कुल
1. सूपी	3	2	2	2	1	10
	(30.00)	(20.00)	(20.00)	(20.00)	(10.00)	(100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	3	–	3	3	1	10
	(30.00)		(30.00)	(30.00)	(10.00)	(100.00)
3. लाहुर	1	6	3	–	–	10
	(10.00)	(60.00)	(30.00)			(100.00)
4. हरकोट	4	–	5	1	–	10
	(40.00)		(50.00)	(10.00)		(100.00)
5. खलभूनी	3	–	4	3	–	10
	(30.00)		(40.00)	(30.00)		(100.00)
कुल	14	8	17	9	2	50
	(28.00)	(16.00)	(34.00)	(18.00)	(4.00)	(100.00)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

2.2.4 व्यवसाय के अनुसार उद्यमियों का वर्गीकरण

तालिका संख्या 2.4 में उद्यमियों के प्राथमिक व द्वितीयक व्यवसाय को दर्शाया गया है। कृषि एक फसली होने व जोत का आकार बहुत छोटा होने के कारण हमारे प्रतिदर्श के 52.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उद्योग को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए है। रिंगाल उद्योग में भी वर्ष भर कार्य न होने की वजह से ये उद्यमी कृषि को द्वितीयक व्यवसाय के रूप में अपनाये हैं। हमारे प्रतिदर्श में 44.0 प्रतिशत उद्यमी कृषि को अपना मुख्य व्यवसाय तथा 4.0 प्रतिशत उद्यमी अकृषि श्रमिक व स्वरोजगार को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं और यही उद्यमी रिंगाल उद्योग को द्वितीय व्यवसाय के रूप में अपनाये हुए हैं।

तालिका संख्या 2.4
व्यवसाय के अनुसार उद्यमियों का वर्गीकरण

गांव का नाम	मुख्य व्यवसाय					द्वितीयक व्यवसाय		
	कृषि	रिंगाल उद्योग	अकृषि श्रमिक	स्वरोजगार	कुल	कृषि	रिंगाल	कुल
1. पुर्पी	2 (20.00)	6 (60.0)	1 (10.0)	1 (10.0)	10 (100.0)	6 (60.0)	4 (40.0)	10 (100.0)
2. खलपट्टा मिकिला	4 (40.00)	6 (60.0)	–	–	10 (100.0)	6 (60.0)	4 (40.0)	10 (100.0)
3. लाहूर	10 (100.0)	–	–	–	10 (100.0)	–	10 (100.0)	10 (100.0)
4. हरकोट	1 (10.00)	9 (90.0)	–	–	10 (100.0)	9 (90.0)	1 (10.0)	10 (100.0)
5. खलमूनी	5 (50.00)	5 (50.0)	–	–	10 (100.0)	5 (50.0)	5 (50.0)	10 (100.0)
कुल	22 (44.00)	26 (52.0)	1 (2.00)	1 (2.00)	50 (100.0)	26 (52.0)	24 (48.0)	50 (100.0)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

2.2.5 उद्यमियों की पारिवारिक विशेषताएं:

तालिका संख्या 2.5 में हमारे चयनित उद्यमियों के परिवार की सामाजिक विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। हमारे चयनित परिवारों में कुल 137 पुरुष व 122 स्त्रियां है और औसत परिवार का आकार 5.2 व्यक्ति प्रति परिवार है। हमारे चयनित परिवारों में स्त्री व पुरुष का अनुपात 890 पाया गया है। हमारे प्रतिदर्श का आकार छोटा होने की वजह से यह स्थिति परिलक्षित होती है।

विद्यालय दूर दूर होने, उबड़ खाबड़ रास्ते व नाले व गधेरों के पड़ने के कारण प्रारम्भ से ही हमारे चयनित गांवों के निवासी शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ रहे हैं। हमारे चयनित गांव के 46.0 प्रतिशत लोगों का अशिक्षित पाया जाना इसका स्पष्ट प्रमाण है। इसके साथ साथ हमारे चयनित परिवारों के 9.0 प्रतिशत लोग मात्र अक्षर ज्ञान प्राप्त किये हुए हैं।

वर्तमान समय में गांवों में प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय खुलने के कारण नयी पीढ़ी के शिक्षा स्तर में अभिवृद्धि की प्रवृति दृष्टिगोचर होती है। लेकिन स्त्रियों का शिक्षा स्तर अभी भी काफी पिछड़ा हुआ है। हमारे सभी चयनित परिवारों में पुरुष सदस्यों की साक्षरता दर लगभग 72.0 प्रतिशत पायी गयी है लेकिन स्त्रियों की साक्षरता दर लगभग 34.2 प्रतिशत है जो विकास खण्ड कपकोट व उत्तराखण्ड से अधिक है जिसका कारण हमारा प्रतिदर्श आकार छोटा होना रहा है जबकि पुरुष साक्षरता दर हमारे चयनित विकास खण्ड कपकोट पुरुषों में लगभग समान है। हमारे चयनित गांवों के एक गांव खलभूनी में मात्र एक व्यक्ति उच्च शिक्षा पाया हुआ है। कुल मिलाकर हमारे चयनित परिवारों में लगभग 54.0 प्रतिशत साक्षरता दर देखी गयी है।

हमारे प्रतिदर्श उद्यमी परिवार में लगभग 53.0 प्रतिशत लोग कार्यरत पाये गये हैं। जिसमें कुल पुरुषों में लगभग 72.0 प्रतिशत व कुल स्त्रियों में लगभग 34.0 प्रतिशत स्त्रियां कार्यरत पायी गयी हैं। हमारे अध्ययन में कुल कार्यरत व्यक्तियों में लगभग 48.0 प्रतिशत लोग जो कि विद्यार्थी, बच्चे, वृद्ध व अपंगों के रुप में हैं वे कार्यरत व्यक्तियों के आश्रित हैं। जिसमें से बच्चों का अनुपात 13.5 प्रतिशत, 30.5 प्रतिशत विद्यार्थी तथा 3.5 प्रतिशत वृद्ध व अपंग हैं।

मकान व भूमि हमारे उद्यमियों की स्थायी सम्पत्ति है। यद्यपि हमारे प्रतिदर्श के 66.0 प्रतिशत लोगों के पास रहने के लिये पर्याप्त मकान नहीं है लेकिन मकान में रहने व रिंगाल उद्योग के लिये पर्याप्त जगह न होने पर भी हमारे शत प्रतिशत उद्यमियों के अपने घर हैं और लगभग 94.0 प्रतिशत घर पक्के बने हैं। हमारे चयनित गांव खलभूनी व मिकिला खलपटा के बीच में वैकल्पिक ऊर्जा विकास संस्थान के द्वारा लघु विद्युत इकाई की स्थापना की गयी है। वर्तमान समय में घरों में विद्युत उपभोग पर अनुदान दिया जा रहा है जिस कारण से खलपट्टा मिकिला के 40.0 प्रतिशत व खलभूनी के 20.0 प्रतिशत लोगों ने विद्युत कनेक्शन लिया है और ये परिवार घरों की रोशनी के साथ-साथ रिंगाल उद्योग के कार्यों में भी विद्युत का उपयोग कर रहे हैं।

हमारे चयनित गांवों के उद्यमियों में कोई भी भूमिहीन नहीं पाया गया है लेकिन भूमि की जोतें विशेषकर अनुसूचित जाति व जनजाति के उद्यमियों की भूमि जोतें बहुत छोटी हैं। हमारे सभी चयनित गांवों के प्रति उद्यमी परिवार की भूमि जोत का आकार मात्र 0.6 एकड़ है। यद्यपि हमारे चयनित लाहुर गांव के उच्च जाति के प्रति उद्यमी परिवार का औसत जोत आकार 1.5 एकड़ है जिसके कारण हमारे चयनित प्रति उद्यमी परिवार का औसत जोत आकार आधे एकड़ से अधिक आया है लेकिन वास्तव में खलपट्टा व हरकोट के उद्यमी प्रति परिवार का जोत आकार आधे एकड़ से भी कम है।

तालिका संख्या 2.5

उद्यमियों की पारिवारिक विशेषताएं

गांव/विशेषताएं	सूपी	सजपट्टा मिकिलस	लाहुर	हरकोट	सलमूनी	कुल
1. परिवार का औसत आकार	5.9	5.3	4.8	4.4	5.5	5.2
2. स्त्री-पुरुष अनुपात	967	963	778	1000	774	890
3. साक्षरता दर						
पुरुष	46.7	74.1	88.9	68.2	80.6	71.5
स्त्री	44.8	34.6	33.3	18.2	33.3	33.6
कुल	45.8	54.7	64.6	43.2	60.0	53.7
4. कार्य सहभागिता						
पुरुष	50.0	37.0	62.9	50.0	42.0	48.2
स्त्री	51.7	50.0	80.0	50.0	58.3	57.4
कुल	50.8	43.4	70.8	50.0	49.1	52.5
5. आश्रितों का अनुपात	49.2	56.6	29.2	50.0	50.9	47.5
6. कुल जनसंख्या में बच्चों का अनुपात	23.7	15.1	6.2	20.5	1.8	13.5
7. कुल जनसंख्या में विद्यार्थियों का अनुपात	22.0	37.0	22.9	27.3	41.8	30.5
8. कुल जनसंख्या में अपंग व वृद्धों का अनुपात	3.4	3.7	–	2.3	7.3	3.5
9. प्रति परिवार भूमि जोत आकार (एकड़)	0.5	0.3	1.3	0.4	0.5	0.6

2.2.6 उद्यमी परिवारों में रोजगार का आकार

साधारणतया पर्वतीय क्षेत्र में रिंगाल उत्पादों का उत्पादन घरेलू उद्योग के रूप में किया जाता है। जिन परिवारों में इस उद्योग में कई पीढ़ियों से कुशल हस्त शिल्पी लगे हुए हैं वर्तमान समय में भी उन्हीं परिवारों में रिंगाल का कार्य किया जाता है। हमारे अध्ययन के 50 इकाइयों में 104 लोग रिंगाल उत्पाद बनाने के कार्य में लगे हुए हैं। रिंगाल उत्पाद बनाने वाले हस्तशिल्पियों व दस्तकारों में 33.0 प्रतिशत लोग रिंगाल के कार्य को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं। पुरुष उद्यमियों की तरह स्त्रियां भी रिंगाल के उत्पाद बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। कुल रिंगाल उद्योग में लगे उद्यमियों में लगभग 42.0 प्रतिशत स्त्री उद्यमी हैं उनमें से 5.0 प्रतिशत स्त्री उद्यमी रिंगाल उद्योग को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं जबकि शेष स्त्रियां रिंगाल उद्योग को अपना द्वितीयक व्यवसाय बनाये हैं।

हमारे अध्ययन के सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 2 व्यक्ति प्रति परिवार से रिंगाल उत्पाद बनाने में लगे हुए है। यद्यपि विद्यालय में जाने वाले विद्यार्थियों द्वारा भी रिंगाल उत्पाद बनाने का कार्य किया जाता है लेकिन हमारे सर्वेक्षण के अनुसार उनको रिंगाल उत्पाद बनाते हुए नहीं पाया गया है।

तालिका संख्या 2.6

रिंगाल उद्योग में रोजगार का आकार

गांव का नाम	मुख्य व्यवसाय			द्वितीयक व्यवसाय			कुल रोजगार			ईकाइयों की संख्या
	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	
1. सूपी	6	2	8	6	3	9	12	5	17	10
2. सलपट्टा मिकिला	5	3	8	2	7	9	7	10	17	10
3. लाहुर	2	–	2	16	9	25	18	9	27	10
4. हरकोट	10	–	10	1	8	9	11	8	9	10
5. सलभूनी	6	–	6	6	12	18	12	12	24	10
कुल	29	5	34	31	39	70	60	44	104	50

<u>गत वर्ष रिंगाल उद्योग में लगे उद्यमियों के वार्षिक कार्य दिवस, प्रतिदिन कार्य घण्टे व प्रति उद्यमी वार्षिक आय अर्जन</u>

साधारणतः यह देखा गया है कि [illegible] कृषि आय अर्जन का मुख्य साधन नहीं रहा है लेकिन हमारे सर्वेक्षण वाले गांवों में अभी भी कुल कर्मकारों के लगभग 69.0 प्रतिशत लोग कृषि को तथा 25.0 प्रतिशत लोग रिंगाल उद्योग को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं। शेष लोग अकृषि श्रमिक व स्वरोजगार को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं। कृषि के बाद चयनित गांवों में रिंगाल उद्योग व रोजगार व आय अर्जन की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

तालिका संख्या 2.7 में गतवर्ष रिंगाल उत्पाद बनाने वाले दस्तकारों के रोजगार की स्थिति व अर्जित आय का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से ज्ञात होता है कि हमारे चयनित परिवारों के जो 104 दस्तकार रिंगाल उत्पाद बनाने के कार्य में लगे हुए हैं उनमें प्रति दस्तकार या हस्तशिल्पी को कुल 91 दिन तक रिंगाल उत्पाद बनाने के लिये कार्य मिलता है। पुरूष दस्तकार (121 दिन) की तुलना में स्त्री दस्तकारों को वर्ष में 56 दिन तक ही कार्य करने का अवसर मिलता है। जो कार्य दिवस वर्ष में एक दस्तकार को रिंगाल उत्पाद बनाने के लिये उपलब्ध होते हैं उन दिनों प्रति दस्तकार को 5.55 घन्टे तक कार्य करते पाया गया है। जहां एक ओर पुरूष सदस्य प्रति कार्य दिवस 6.64 घन्टे कार्य करता है वहीं दूसरी ओर प्रति स्त्री सदस्य को रिंगाल उद्योग में कार्य करने के साथ साथ कृषि की अधिकतर जिम्मेदारी, पशुपालन व अन्य घरेलू कार्यों में कार्य करते हुए प्रति कार्य दिवस औसतन 4.33 घन्टे कार्य करते हुए पाया गया है। जहां तक हस्तशिल्पी के आय अर्जन का प्रश्न है, हमारे अध्ययन में एक हस्तशिल्पी 1461 रुपया वार्षिक अर्जित करता हुआ पाया गया है। जहां प्रति पुरूष हस्तशिल्पी 1909 रुपया अर्जित कर रहा है वहीं स्त्री हस्तशिल्पी 850 रुपया वार्षिक अर्जित कर रही है।

<u>तालिका 2.7</u>

<u>गत वर्ष रिंगाल उद्योग में लगे पारिवारिक उद्यमियों के रोजगार दिवस व प्रति उद्यमी अर्जित वार्षिक आय का विवरण</u>

गांव का नाम	रोजगार			वर्ष में प्रति कार्यकर्ता के कार्य दिन			प्रति कार्यकर्ता एक दिन के कार्य घन्टे			वर्ष में प्रति कार्यकर्ता द्वारा अर्जित आय		
	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
1. सूपी	12	5	17	76	64	72	7.21	6.28	6.90	2404	1511	2141
2. खलपट्टा मिकिला	7	10	17	203	90	139	7.80	4.85	6.13	2449	806	1482
3. लाहुर	18	9	27	46	27	37	5.38	4.14	4.80	876	549	768
4. हरकोट	11	8	19	202	53	135	7.36	4.67	6.15	2400	877	1759
5. खलभूनी	12	12	24	132	52	90	6.08	2.86	4.41	2198	817	1507
कुल	60	44	10	121	56	91	6.64	4.33	5.55	1909	850	1461

2.2.8 चयनित उद्यमी परिवारों के आय के स्त्रोत

तालिका संख्या 2.8 में उद्यमी परिवारों के विभिन्न आय स्त्रोतों व उनसे प्राप्त आय को दर्शाया गया है तालिका से ज्ञात होता है कि चयनित उद्यमी परिवारों की लगभग 37.0 प्रतिशत आय रिंगाल उद्योग से तथा लगभग 21.0 प्रतिशत आय अकृषि श्रमिक के कार्यों को करने से हो रही है। रिंगाल उद्योग व अकृषि श्रमिक के बाद लगभग 19.0 प्रतिशत आय पशुपालन से हो रही है जबकि कृषि का योगदान मात्र लगभग 13.0 प्रतिशत है। यह भी देखने में आया है कि जो गांव हिमालय से नजदीक होते जा रहे हैं उन गांवों के परिवार में रिंगाल उत्पादन से होने वाली आय अधिक देखी गयी है यह स्वभाविक भी है उन क्षेत्रों में ठण्डे मौसम के कारण कृषि नाममात्र की है और रिंगाल का उत्पादन अधिक होता है। हमारे चयनित प्रति उद्यमी परिवार की वार्षिक औसत आय 8170 रुपया पायी गयी है जो उनकी गरीबी को दर्शाता है।

तालिका संख्या 2.8

उद्यमी परिवारों के आय के स्त्रोत (रुपये में)

गांव का नाम	कृषि	अकृषि श्रमिक	रिंगाल	पेंशन	पशुपालन	व्यापार	जजमानी	कुल	प्रति परिवार वार्षिक
1. सूपी	10200	18000	36404	1200	21100	2500	600	90004	9000
	(11.3)	(20.0)	(40.5)	(1.3)	(23.5)	(2.8)	(0.6)	(100.0)	
2. सलपट्टा मिकिला	5600	20000	25200	-	4600	-	-	55400	5540
	(10.0)	(36.1)	(45.5)		(8.3)			(100.0)	
3. लाहुर	18300	18500	20721	33000	34000	-	-	124521	12452
	(14.7)	(14.9)	(16.6)	(26.5)	(27.3)			(100.0)	
4. हरकोट	7800	14400	33425	-	7800	-	900	64325	6433
	(12.1)	(22.4)	(52.0)		(12.1)		(1.4)	(100.0)	
5. सलभूनी	10100	16600	36172	-	10700	-	700	74272	7427
	(13.6)	(22.4)	(48.7)		(14.4)		(0.9)	(100.0)	
कुल	52000	87500	151922	34200	78200	2500	2200	408522	8170
	(12.7)	(21.4)	(37.2)	(8.4)	(19.2)	(0.6)	(0.5)	(100.0)	

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं ।

यद्यपि रिंगाल उत्पाद बनाने के कार्य में हमारे प्रतिदर्श के उद्यमियों में अधिकतर अनुसूचित जाति व जनजाति के उद्यमी है लेकिन अन्य जाति के उद्यमियों द्वारा भी रिंगाल उत्पाद बनाने का कार्य किया जा रहा है। हमारे प्रतिदर्श के अधिकतर उद्यमियों की आयु 35 से 59 वर्ष पायी गयी है और कुल उद्यमियों में 56.0 प्रतिशत शिक्षित तथा 44.0 प्रतिशत निरक्षर और अक्षर ज्ञान वाले पाये गये हैं। हमारे प्रतिदर्श में 52.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उद्योग तथा 44.0 प्रतिशत उद्यमी कृषि को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं। इसके अलावा 4.0 प्रतिशत उद्यमी अकृषि श्रमिक व स्वरोजगार को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं। सामान्यतः यह देखा गया है कि जो उद्यमी रिंगाल उद्योग को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये हुए हैं वे कृषि में द्वितीयक व्यवसाय के रूप में कार्य करते हैं इसी प्रकार जो कृषि या अन्य व्यवसाय को प्राथमिक व्यवसाय बनाये हैं वे उद्यमी रिंगाल उद्योग को अपना द्वितीयक व्यवसाय बनाये हुए हैं।

हमारे प्रतिदर्श उद्यमी के परिवार का औसत आकार 5.2 व्यक्ति प्रति परिवार पाया गया है। विद्यालय दूर-दूर होने, उबड़ खाबड़ रास्ते व नाले तथा गधेरों के कारण उद्यमी परिवारों के लगभग 46.0 प्रतिशत सदस्य निरक्षर पाये गये हैं तथा सभी प्रतिदर्श उद्यमी परिवार के लगभग 72.0 प्रतिशत पुरुष व लगभग 34.0 प्रतिशत स्त्रियां शिक्षित पायी गयी हैं। हमारे प्रतिदर्श के सभी परिवारों में कुल 53.0 प्रतिशत लोग कार्यरत हैं तथा रिंगाल के 50 ईकाइयों में 104 लोग लगे हैं जो प्रति परिवार लगभग दो व्यक्ति आता है। कुल रिंगाल उद्योग में लगे दस्तकारों में 33.0 प्रतिशत लोग रिंगाल के कार्य को प्राथमिक व्यवसाय के रूप में अपनाये हैं।

रिंगाल उद्योग में लगे प्रति दस्तकार को वर्ष में 91 दिन (पुरुष 121 दिन, स्त्री 56 दिन) कार्य मिलता है और एक दस्तकार को प्रति दिन 5.55 घन्टे (पुरुष 6.64, घन्टे तथा स्त्री 4.33 घन्टे) कार्य करते हुए पाया गया है और प्रति दस्तकार 1461 रुपया (पुरुष 1909, स्त्री 850) रिंगाल से वार्षिक आय का अर्जन कर रहे हैं। हमारे प्रतिदर्श उद्यमी परिवारों की कुल आय में रिंगाल उद्योग का योगदान लगभग 37.0 प्रतिशत है। शेष पारिवारिक आय, अकृषि श्रमिक, कृषि पशुपालन, छोटी मोटी दुकान, जजमानी तथा पेंशन से हो रही हैं। कुल मिलाकर हमारे प्रतिदर्श के प्रति उद्यमी परिवार की सभी स्त्रोतों से वार्षिक आय 8170 रुपया देखी गयी है।

28794

अध्याय - 3

रिंगाल उद्योग - कच्चे माल की उपलब्धता व बाजार की स्थिति :

अध्ययन के इस भाग में कच्चा माल रिंगाल जिसको स्थानीय बोली में निङाल् के नाम से जाना जाता है, के प्रकार, उसकी उपलब्धता की स्थिति, समस्यायें व उसको उपलब्ध कराने के लिये उद्यमियों द्वारा दिये गये सुझावों के विवरण के साथ-साथ उद्यमियों द्वारा बनाये गये विभिन्न रिंगाल उत्पादों के बिक्री की स्थिति समस्यायें व सम्भावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

3.3.1 रिंगाल के प्रकार

साधारणतया रिंगाल के विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने में जिस कच्चेमाल का उपयोग किया जाता है, वह तीन प्रकार का होता है, और हमारे चयनित गाँवों व विकास खण्ड के अलावा सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के हिमालयी क्षेत्र में उपरोक्त तीनों प्रकार के रिंगाल का उपयोग किया जाता है। अतः यहां रिंगाल के तीनों किस्मों का संक्षिप्त विवरण देना उचित होगा।

1. थो रिंगाल

थो रिंगाल को स्थानीय दस्तकार लोग वन व पीला रिंगाल के नाम से पुकारते हैं। सामान्यतया यह रिंगाल समुद्र सतह से 2100 मीटर से भी अधिक ऊचाँई में पाया जाता है और नैसर्गिक रूप से यह रिंगाल उगता है। रिंगाल के सभी किस्मों में यह सबसे अच्छा और मजबूत होता है और सभी तरह के उत्पाद बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। आमतौर पर थो रिंगाल से बने उत्पाद आर्कषक और मजबूत होने के कारण उनकी मांग अधिक होती है जिस कारण बाजार में उनकी कीमत भी अधिक होती है।

2. जमुर रिंगाल

जमुर रिंगाल भी प्रकृति प्रदत्त है। यह थो रिंगाल की तरह अधिक ऊचाँई वाले भाग अर्थात् हिमालय के निकटस्थ स्थित वनों में पाया जाता है। मजबूती के हिसाब से जमुर रिंगाल यद्यपि थो रिंगाल के समान होता है लेकिन आकृति में थो रिंगाल से मोटा होता है। जमुर रिंगाल के उत्पाद मजबूत अवश्य होते हैं लेकिन उत्पादों के अन्तिम स्वरूप में सफाई कम आ पाती है जिस कारण कुछ विशेष किस्म के उत्पादों को बनाने में ही इसका उपयोग किया जाता है।

3. गड़ रिंगाल

गड़ रिंगाल को स्थानीय लोगों द्वारा पाणि व घरेलू रिंगाल के नाम से जाना जाता है। इसको एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर उगाया जाता है और ग्रामीण लोग अपने घरों के आस पास गड़ रिंगाल को उगाते है, जो दो तीन वर्षों में रिंगाल के उत्पाद बनाने के लिये कच्चा माल प्रदान करते हैं। गड़ रिंगाल का कटान व छटान प्रति वर्ष किया जाता है और एक बार गड़ रिंगाल को लगाने के बाद 12 से 15 वर्षों तक कच्चा माल उपलब्ध होते रहता है लेकिन लगभग 15 वर्ष बाद यह रिंगाल स्वतः समाप्त हो जाता है, और 2-3 वर्ष बाद पुनः उसी स्थान पर उग आता है। यही स्थिति थो और जमूर रिंगाल के वनों में भी होती है। गड़ रिंगाल से बने उत्पाद थो और जमूर रिंगाल से बने उत्पादों की तुलना में कमजोर, घटिया व कम कीमत वाले होते हैं।

3.3.2 गतवर्ष उद्यमियों द्वारा उपयोग किया गया रिंगाल उसका स्त्रोत व प्रति ईकाई द्वारा खरीदे गये रिंगाल की कीमत

उत्पादों की मजबूती व खूबसूरती के कारण हमारे चयनित गांवों के शतप्रतिशत ईकाइयों के द्वारा विभिन्न उत्पादों को बनाने के लिये थो व जमूर रिंगाल का उपयोग किया जा रहा है लेकिन अपने खेतो में रिंगाल उपलब्ध होने पर हमारे चयनित उद्यमी गड़ रिंगाल का उपयोग भी करते हुए पाये गये है लेकिन गड़ रिंगाल के उत्पादों का वाणिज्यिक महत्व कम होने के कारण हमारे चयनित ईकाइयों के मात्र 14.0 प्रतिशत इकाईयां ही गड़ रिंगाल का उपयोग कर रहे हैं।

साधारणतया थो व जमूर रिंगाल हिमालय के वनों में बहुतायत रूप से पाया जाता है जो गांवों से काफी दूर होते हैं। लेकिन जो गांव हिमालय के नजदीक है उन गांवों में रिंगाल उत्पन्न होने वाले वनों के क्षेत्र को वन पचायत में सम्मिलित कर लिया गया है। हमारे चयनित तीन गांव सुपी, मिकिला खलपट्टा व लाहुर के गांवों में वन पंचायत विद्यमान है। प्रारम्भ से ही इन गांवों में रिंगाल व अन्य वनस्पतियों के संरक्षण के लिये चौकीदार को रखा जाता रहा है और जब रिंगाल को काटने का समय आता था तो गांव के प्रत्येक घर से एक व्यक्ति को प्रतिदिन सिर बोझ रिंगाल लाने की व्यवस्था थी और चौकीदार को वन पंचायत में रिंगाल को कटने से बचाने के एवज में प्रति परिवार एक नाली (वजनर लगभग 1.5 किलोग्राम) अनाज देते थे। लेकिन वर्तमान में नाली की जगह चौकीदार को नकद में भुगतान की प्रथा चल गयी है इसलिये ग्रामवासी या तो स्वयं चन्दे के माध्यम से नकदी की व्यवस्था करते हैं या फिर वन पंचायत में पैदा होने वाले रिंगाल की बिक्री की जाती है ताकि चौकीदार के वेतन के साथ-साथ वन पंचायत व ग्राम विकास के अन्य कार्यों में उस आय का उपयोग किया जा सके।

हमारे चयनित इकाईयों में से 56.0 प्रतिशत इकाईयों ने अपनी वन पंचायत से रिंगाल को खरीदा है और प्रति गांव की वन पंचायत से कच्चे माल की आपूर्ति पूरी न होने पर गांव के उद्यमी 5-5 या 7-8 की टोली बनाकर एक गांव से दूसरे गांव की वन पंचायतों से नीलामी के माध्यम से रिंगाल के प्लाट खरीदते है और रिंगाल काटकर जंगल में ही छिलकर उनके पुत्तरे (रिंगाल का छिल्का जिनसे उत्पाद बनते हैं) बनाकर लाते हैं। हमारे चयनितत इकाईयों में से 66.0 प्रतिशत इकाईयों ने दूसरे गांव की वन पंचायतों से रिंगाल को खरीदा है जिसमें 40.0 प्रतिशत इकाईयों ने अपने गांव की वन पंचायत में रिंगाल न होने व 20.0 प्रतिशत ने अपने गांव की वन पंचायत से कच्चा माल कम उपलब्ध होने पर दूसरे गांवों की वन पंचायत से रिंगाल खरीदा है। तालिका संख्या 3.1 में गतवर्ष प्रति परिवार खरीदे गये रिंगाल की कीमत को देखने से ज्ञात होता है कि गत वर्ष हमारे चयनित एक इकाई ने औसतन 427 रुपये व दूसरे गांवों की वन पंचायत से औसतन 1278 रुपये अर्थात् वर्ष में एक इकाई ने औसतन 1705 रुपये का कच्चा माल खरीदा है।

तालिका संख्या 3.1

रिंगाल प्रकार, स्त्रोत व प्रति इकाई रिंगाल खरीद मूल्य

	रिंगाल प्रकार			रिंगाल स्त्रोत		प्रति इकाई द्वारा खरीदे रिंगाल की कीमत	
गांव का नाम	थो	जमुर	गड़	अपनी वन पंचायत	दूसरे गांव की वन पंचायत	अपनी वन पंचायत	दूसरे गांव की वन पंचायत
1. सूपी	10	10	3	8	3	805	1240
2. खलपटा मिकिला	10	10	–	10	10	880	1500
3. लाहूर	10	10	2	10	–	450	–
4. हरकोट	10	10	2	–	10	–	1800
5. खलभूनी	10	10	–	–	10	–	1850
कुल	50	50	7	28	33	427	1278

3.3.3 कच्चे माल की समस्यायें

सामान्यतः गांव में सर्वेक्षण के समय ज्ञात हुआ कि आज से 20-25 वर्ष पूर्व तक रिंगाल बनाने के लिये रिंगाल की समस्या नहीं थी लेकिन जनसंख्या के बढ़ते दबाव व वनों के अन्धाधुन्ध कटान से वर्तमान समय में कच्चे माल की गम्भीर समस्यायें उत्पन्न होती जा रही है। हमारे चयनित कुल उद्यमियों में से 98.0 प्रतिशत उद्यमियों ने कच्चे माल के उपलब्ध न होने की शिकायत की है। कच्चेमाल की कम उपलब्धता के साथ साथ लगभग 14.0 प्रतिशत उद्यमियों ने रिंगाल को गांव से काफी दूर उपलब्ध होने की शिकायत की है।

जब कच्चामाल दूसरे गांव की वन पंचायतों से लाया जाता है तो उन वन पंचायतों में जाने के लिये रास्ते बने नहीं होते है और घने जंगलों में उद्यमियों को स्वयं रास्ते खोजने पड़ते है। हमारे चयनित लगभग 11.0 प्रतिशत उद्यमी रास्ते की समस्या बताते हैं। जब उद्यमी वन पंचायत से नीलामी के माध्यम से रिंगाल प्लाट खरीदते है तो उस समय साधारणतः जो भी उद्यमी रिंगाल का कार्य करते है वे अपने लिये रिंगाल काटते हैं दूसरे के यहाँ मजदूरी पर रिंगाल काटने के लिये उस समय मजदूर कम मिलते हैं, दूसरी ओर जंगल से समूचे रिंगाल को उद्यमी अपने इकाई पर भारी वजन के कारण लाने में असमर्थ रहते है इसलिये रिंगाल के बाहरी छिलके (पुतरे) निकालकर हर उद्यमी अपने इकाई पर लाना चाहता है लेकिन पुतरे निकालने के लिये मजदूर नहीं मिल पाते है। हमारे प्रतिदर्श के लगभग 17.0 प्रतिशत उद्यमी मजदूरों की समस्या बताते हैं।

पारम्परिक रूप से रिंगाल उद्योग में लगे उद्यमियों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण लगभग 22.0 प्रतिशत उद्यमी कच्चे माल को खरीदने में धन की कमी महसूस करते हैं और लगभग 5.0 प्रतिशत उद्यमी जो भी कच्चामाल मिलता है उसकी कीमत अधिक होने की शिकायत करते हैं। हमारे चयनित उद्यमियों में से लगभग 31.0 प्रतिशत ने कच्चे माल के पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने की समस्या बतायी है क्योंकि उद्यमी जो भी उत्पाद बनाना चाहते हैं उनको बनाने के लिये उनको मांग के अनुसार कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पाता है जबकि वे अधिक उत्पाद बनाने के इच्छुक हैं।

तालिका संख्या - 3.2 : कच्चे माल की समस्या

गांव का नाम	कच्चे माल की उपलब्धता: हाँ	कच्चे माल की उपलब्धता: नहीं	दूर से लाना पड़ता है	अधिक मूल्य	मजदूर की समस्या	रिंगाल की अपर्याप्तता	धन की कमी	रास्तों का अभाव	कुल
1. सूपी	1	9	9	6	1	2	2	3	23
	(10.0)	(90.0)	(39.12)	(26.09)	(4.35)	(8.70)	(8.70)	(13.04)	(100.0)
2. खलपट्टा मिकिला	-	10	1	-	4	10	8	2	25
		(100.0)	(4.00)		(16.00)	(40.00)	(32.00)	(8.00)	(100.0)
3. लाहुर	-	10	7	-	3	9	-	-	19
		(100.0)	(36.84)		(15.79)	(47.37)			(100.0)
4. हरकोट	-	10	1	-	8	10	9	5	33
		(100.0)	(3.03)		(24.24)	(30.31)	(27.27)	(15.15)	(100.0)
5. खलमूनी	-	10	-	-	6	9	10	4	29
		(100.0)			(20.69)	(31.03)	(34.48)	(13.79)	(100.0)
कुल	1	49	18	6	22	40	29	14	129
	(2.00)	(98.00)	(13.95)	(4.65)	(17.06)	(31.01)	(22.48)	(10.85)	(100.0)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

3.3.4 कच्चे माल की समस्या के सामाधान हेतु उद्यमियों के सुझाव

हमारे सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि हमारे उद्यमियों को कच्चामाल उनकी आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध नहीं हो पा रहा है क्योंकि कच्चे माल के सम्बन्ध में स्थानीय उद्यमी अनेक समस्याओं से ग्रसित हैं और वे स्वयं इन समस्याओं के सामाधान भी प्रस्तुत करते हैं। जिनमें से लगभग 36.0 प्रतिशत उद्यमियों का कहना है कि रिंगाल का वनीकरण करके उगाया जाय अर्थात् वन व थो रिंगाल की अधिक मात्रा में व अन्य रिंगाल को कम मात्रा में उगाया जाय क्योंकि थो रिंगाल के उत्पाद मजबूत व अच्छे बनते हैं, इसके साथ ही वनों में पहुंचने के लिये पैदल व घोड़े खच्चरों के चलने के लिये रास्तों का निर्माण करना चाहिए ताकि दूसरे गांव के वन पंचायतों से रिंगाल को, रिंगाल कार्यों में संलग्न परिवार आसानी से अपनी इकाई में पहुचों सकें। इस तरह का सुझाव हमारे चयनित परिवारों में लगभग 17.0 प्रतिशत उद्यमी देते हैं।

यह पहले भी कहा जा चुका है कि पारम्परिक रूप से रिंगाल उद्योग में लगे रिंगाल उद्यमियों की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर रही है इस हालात में सरकार को उनको कच्चेमाल की खरीददारी में उनको आर्थिक सहायता करनी चाहिए। हमारे चयनित उद्यमियों में लगभग 16.0 प्रतिशत उद्यमी सरकार द्वारा धन की व्यवस्था की आशा करते हैं। हमारे चयनित उद्यमियों में लगभग 12.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल को सस्ते दामों में उपलब्ध होने की बात सुझाते हैं क्योंकि दूसरे गांव के वन पंचायतों द्वारा रिंगाल का नीलाम अधिक बोली लगाने वाले को दिया जाता है जिस कारण रिंगाल का मूल्य स्वतः बढ़ जाता है।

हमारे चयनित उद्यमियों में से 10.0 प्रतिशत उद्यमी गांव में ही रिंगाल लगाने का सुझाव देते हैं क्योंकि सरकार यदि चारे पत्ती व अन्य वृक्षों का वनीकरण कर सकती है तो रिंगाल के वन लगाना भी सरकार के लिये कठिन कार्य नहीं है। तालिका संख्या 3.2 से यह भी ज्ञात होता है कि लगभग 6.0 प्रतिशत उद्यमी वन पंचायत से उपलब्ध होने वाले रिंगाल के समुचित वितरण का सुझाव देते हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि गांव में जो परिवार रिंगाल का कार्य भी नहीं करते है वे भी रिंगला को वन पंचायत से लाते हैं और उसको अधिक दामों में बेचते हैं। अतः इन उद्यमियों के अनुसार रिंगाल को उन्हीं उद्यमियों को बेचा जाय जो रिंगाल के उत्पाद बनाने के कार्यों में संलग्न हैं। हमारे अध्ययन में लगभग 1.0 प्रतिशत उत्तरदाता रिंगाल का अच्छा बीज उपलब्ध कराने का सुझाव देते हैं।

तालिका संख्या 3.3

कच्चे माल की समस्या के समाधान के सुझाव

गांव का नाम	रिंगाल गांव में लगाया जाय	रास्तों की व्यवस्था हो	रिंगाल सस्ता हो	रिंगाल का वर्गीकरण करके उगाया जाय	सरकार द्वारा धन की व्यवस्था	वन पंचायत वितरण की समुचित व्यवस्था	अच्छा बीज पौध उपलब्ध हो	कुल
1. सूपी	4 (22.22)	3 (16.67)	5 (27.78)	5 (27.78)	1 (5.55)	-	-	18 (100.0)
2. खलपट्टा मिकिला	1 (4.00)	3 (12.00)	1 (4.00)	10 (40.00)	4 (16.00)	6 (24.00)	-	25 (100.0)
3. लाहुर	5 (29.41)	-	3 (17.65)	7 (41.18)	-	1 (5.88)	1 (5.88)	17 (100.0)
4. हरकोट	1 (4.00)	7 (28.00)	3 (12.00)	9 (36.00)	5 (20.00)	-	-	25 (100.0)
5. खलदूनी	-	6 (24.00)	2 (8.00)	9 (36.00)	8 (32.00)	-	-	25 (100.0)
कुल	11 (10.00)	19 (17.27)	14 (12.73)	40 (36.36)	18 (16.37)	7 (6.36)	1 (0.91)	110 (100.0)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

3.4.1 रिंगाल उत्पादों की बिक्री

साधारणतया रिंगाल उद्योग में लगे उद्यमियों द्वारा उन्हीं उत्पादों को अधिक बनाया जाता है जिनकी अधिक मांग रहती है जिस कारण उद्यमियों को अपने हस्तनिर्मित उत्पादों की बिक्री करने में समस्या कम आती है। तालिका संख्या 3.4 में हमारे चयनित उद्यमियों द्वारा निर्मित माल की बिक्री कहाँ की जाती है। उसका विवरण प्रस्तुत किया गया है तालिका से ज्ञात होता है कि हमारे चयनित लगभग 39.0 प्रतिशत उद्यमी अपने उत्पादों की बिक्री दूसरे गांवों में करते हैं जबकि लगभग 29.0 प्रतिशत उद्यमी दलालों अथवा ठेकेदारों को अपने उत्पाद बेचते हैं। साधारणतया दलाल या ठेकेदार उद्यमियों के लिये तैयार उत्पादों को उनके घर से ही खरीदते हैं। लेकिन कभी-कभी दलालों या ठेकेदारों द्वारा विभिन्न गांवों के मध्य में अपना केन्द्र खोल दिया जाता है जहाँ स्थानीय उद्यमी अपना तैयार माल बेच जाते हैं।

साधारणतया उत्तराखण्ड में विभिन्न मौसमों व ऋतुओं में अनेक त्यौहार व मेले आयोजित होते रहते हैं और रिंगाल उद्यमी अपने उत्पादों को बेचने के लिये इन मेलों में ले जाते हैं और स्थानीय बाजारों में भी रिंगाल उत्पादों की बिक्री की जाती है। हमारे प्रतिदर्श के लगभग 11.0 प्रतिशत उद्यमी बाजार व मेलों में अपने उत्पादों की बिक्री करते हैं। हमारे चयनित गांवों में यह भी देखा गया है कि लगभग 22.0 प्रतिशत उद्यमी अपने गांव में ही रिंगाल उत्पादों की बिक्री कर लेते हैं। अपने गांवों में बिक्री सामान्य तौर कम उत्पाद बनाने वाले या पड़ौसी व स्थानीय गांवों से उत्पादों को खरीदने वाले ग्राहकों द्वारा उन गांवों में जाने के कारण सम्भव हो पाता।

तालिका संख्या 3.4
रिंगाल उत्पाद : बिक्री स्थान

गांव का नाम	अपने गांव में	दूसरे गांव में	दलाल/ठेकेदार	बाजार या मेले	कुल
1. सूपी	9	2	4	5	20
	(45.00)	(10.00)	(20.00)	(25.00)	(100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	–	10	4	3	17
		(58.82)	(23.53)	(17.65)	(100.00)
3. लाहुर	9	–	10	–	19
	(47.37)		(52.63)		(100.00)
4. हरकोट	–	10	2	1	13
		(76.93)	(15.38)	(7.69)	(100.00)
5. खलभूनी	–	10	3		13
		(76.92)	(23.08)		(100.00)
कुल	18	32	23	9	82
	(21.95)	(39.02)	(28.05)	(10.98)	(100.00)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

3.4.2 रिंगाल उत्पाद बिक्री की समस्या

तालिका संख्या 3.5 में हमारे प्रतिदर्श के उद्यमियों को तैयार माल के बिक्रय में आने वाली समस्याओं को उजागर किया गया है। हमारे चयनित उद्यमियों में से 80.0 प्रतिशत उद्यमियों ने रिंगाल उत्पाद बिक्री में होने वाली अनेक समस्याओं से अवगत कराया है। लगभग 21.0 प्रतिशत

उत्तरदाताओं ने यातायात के साधनों का अभाव बताया है। यातायात के साधन न होने के कारण उद्यमियों को मीलों दूर पैदल चलकर व सिर में ढोकर अपने उत्पादों को बेचने के लिये ले जाना पड़ता है और उत्पाद बिक्री के लिये कोई निश्चित स्थान न होने पर उद्यमियों को दूर-दूर के स्थित एक गांव से दूसरे गांव में सिर या पीठ में बोझ लादे घूमना पड़ता है जिसमें सप्ताह तक का समय लग जाता है। काफी घूमने फिरने के बाद भी यदि उनके उत्पाद नहीं बिक पाते हैं तो उनको विवश होकर अपने उत्पादों को सस्ते दामों में बेचना पड़ता है। दूसरे गांवों में उत्पाद बिक्री न होने पर जहाँ उद्यमी सस्ते दामों में उत्पाद बिक्री करते हैं वहीं दूसरी ओर उत्पाद बिक्री खर्च भी बढ़ जाता है। हमारे प्रतिदर्श में रिंगाल उत्पाद बिक्री करने का प्रति परिवार लगभग 1098 रुपया व्यय आया है। आमतौर रिंगाल के उत्पादों को अनाज में वरीयता के आधार पर बेचा जाता है क्योंकि नकद बिक्री करने पर भी उद्यमियों को पुनः अनाज खरीदने के लिये दौड़ धूप करनी पड़ती है। जहाँ रिंगाल उद्यमी मीलों दूर सिर में ढोकर रिंगाल उत्पाद बेचने ले जाते हैं वहीं दूसरी ओर रिंगाल उत्पाद बिक्री से प्राप्त होने वाले अनाज को ढोकर पुनः अपने घर को लौटना पड़ता है जो उनके जीवन को अधिक कष्टकारी बना देता है। सामान्यतः स्त्री व पुरुष दोनों वर्गों द्वारा रिंगाल उत्पाद बिक्री का कार्य किया जाता है। हमारे चयनित उद्यमियों में से लगभग 35.0 प्रतिशत व लगभग 31.0 प्रतिशत उद्यमियों द्वारा क्रमशः गांव-गांव घूमकर उत्पाद बेचना व उचित मूल्य न मिलने की समस्या बताना इनकी पीड़ा को स्पष्ट करता है। लेकिन अभी भी कुछ उद्यमी ऐसे हैं जो वहां की भौगोलिक परिस्थितियों से समझौता किये हैं, वे आज भी कहते हैं कि रिंगाल उत्पादों की बिक्री के बहाने हमें नगर (दूसरे गांव) देखने को मिलते हैं।

तालिका संख्या : 3.5

रिंगाल उत्पाद बिक्री समस्या

गांव का नाम	बिक्री समस्या		समस्यायें				
	हाँ	नहीं	यातायात के साधनों का अभाव	गांव घूमकर बेचना	उचित मूल्य न मिलना	बिक्री केन्द्र का न होना	कुल
1. सूपी	4 (40.00)	6 (60.00)	2 (28.57)	1 (14.29)	3 (42.86)	1 (14.28)	7 (100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	10 (100.00)	–	5 (20.83)	8 (33.33)	6 (25.00)	5 (20.84)	24 (100.00)
3. लाहूर	6 (60.00)	4 (40.00)	2 (18.18)	3 (27.28)	4 (36.36)	2 (18.18)	11 (100.00)
4. हरकोट	10 (100.00)	–	3 (14.29)	10 (47.62)	7 (33.33)	1 (4.76)	21 (100.00)
5. खलभूनी	10 (100.00)	–	7 (25.00)	10 (35.71)	8 (28.57)	3 (10.72)	28 (100.00)
कुल	40 (80.00)	10 (20.00)	19 (20.88)	32 (35.15)	28 (30.78)	12 (13.19)	91 (100.00)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

3.4.3 रिंगाल उत्पाद बिक्री के समाधान हेतु उद्यमियों के सुझाव

रिंगाल उत्पादों की बिक्री में चयनित गांवों के उद्यमियों को जो कष्ट होता है उसके समाधान के लिये वे स्वयं सुझाव देते हैं। हमारे चयनित उद्यमियों में से लगभग 35.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उद्योग के कारोबार वाले गांव में एक-एक बिक्री केन्द्र खोलने का सुझाव देते हैं जबकि लगभग 31.0 प्रतिशत उद्यमी खादी बोर्ड, हस्तशिल्प बोर्ड या विकास खण्ड के माध्यम से उद्यमियों से रिंगाल उत्पाद खरीदने का सुझाव देते हैं क्योंकि बाजार में रिंगाल उत्पादों की काफी मांग है। यदि सरकार स्वयं तैयार माल खरीदने में असमर्थ हो तो सरकार को रिंगाल उत्पादन कार्यों में लगे हुए गांवों के मध्य वाले गांव में सहकारी समिति का गठन करना चाहिये जो कच्चे माल से लेकर उत्पादो की बिक्री तक कारीगरो को सहायता पहुंचा सके। हमारे चयनित गांवों में यातायात के साधन के रूप में मात्र खच्चरों का उपयोग किया जाता है लेकिन रास्ते उबड़- खाबड़ होने व बीच-बीच में पड़ने वाले नदी नालों के कारण उनको सभी गांवों में ले जाना दुष्कर कार्य है। अतः गांवों में चौड़े रास्तों का निर्माण किया जाय और जहां तक सम्भव हो सके सड़क यातायात का विकास किया जाय ताकि लोग जो रिंगाल के कारोबार में लिप्त है अपना उद्योग बढ़ा सकें।

तालिका संख्या : 3.6

रिंगाल उत्पाद बिक्री की समस्या में समाधान के सम्बन्ध में उद्यमियों के सुझाव

गांव का नाम	सरकार स्वयं रिंगाल उत्पाद खरीदें	यातायात के साधनों का विस्तार	गांव में बिक्री केन्द्र खुले	बिक्री के लिये सहकारी समितियां बनें	कुल
1. सुपी	6 (33.33)	6 (33.33)	4 (22.23)	2 (11.11)	18 (100.00)
2. खलपट्टा मिकिला	7 (30.44)	4 (17.39)	9 (39,13)	3 (13.04)	23 (100.00)
3. लाहुर	10 (52.63)	4 (21.05)	3 (15.79)	2 (10.53)	19 (100.00)
4. हरकोट	4 (19.05)	2 (9.52)	10 (47.62)	5 (23.81)	21 (100.00)
5. खलभूनी	5 (21.74)	7 (30.43)	10 (43.48)	1 (4.35)	23 (100.00)
कुल	32 (30.77)	23 (23.12)	36 (34.61)	13 (12.50)	104 (100.00)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

सामान्यतया हमारे प्रतिदर्श उद्यमियों द्वारा रिंगाल उत्पाद बनाने के लिये थो, जमुर और गड़ रिंगाल का उपयोग किया जाता है जिसमें मजबूती और देखने में सुन्दरता वाले उत्पाद थो रिंगाल के बनाये जाते हैं। हमारे प्रतिदर्श से यह भी ज्ञात हुआ है कि रिंगाल उत्पाद बनाने वाले उद्यमी अपने तथा दूसरे गांवों की वन पंचायत से कच्चा माल (रिंगाल) को खरीदते हैं। दूसरे गांव की वन पंचायत से कच्चा माल खरीदने के लिये गांव के उद्यमी 5-5 या 7-8 की टोली बनाकर रिंगाल प्लाट की नीलामी में भाग लेते हैं और जंगल से रिंगाल को छिलकर उसके पुतरे बनाकर लाते हैं। हमारे चयनित कुल उद्यमियों में से 66.0 प्रतिशत उद्यमियों में दूसरे गांव की वन पंचायतों से कच्चेमाल को खरीदा हैं।

हमारे प्रतिदर्श से यह भी ज्ञात होता है कि उद्यमियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है इसके अलावा कच्चे माल को दूर-दूर से लाने व उबड़ खाबड़ रास्तों के कारण उद्यमियों को रिंगाल अपने गांव तक लाने में समस्या आती है इसके अलावा दूसरी वन पंचायत से रिंगाल काटने व छिलने के लिये मजदूर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। हमारे प्रतिदर्श के लगभग 27.0 प्रतिशत उद्यमियों ने कच्चा माल महंगा होने व कच्चे माल को खरीदने में धन की समस्या से अवगत कराया हैं। कच्चे माल की समस्या के समाधान के लिये रिंगाल उत्पाद बनाने वाले गांव में रिंगाल लगाने, रास्तों की व्यवस्था, रिंगाल की अच्छी पौध उपलब्ध कराने, सरकार द्वारा कच्चे माल की खरीददारी के समय आर्थिक सहायता करने तथा वन पंचायत में उपलब्ध रिंगाल का समुचित वितरण करने का सुझाव देते हैं।

उत्तराखण्ड में विभिन्न मौसमों व ऋतुओ में लगने वाले मेलों व त्यौहारों में रिंगाल उत्पादों की बिक्री की जाती है इसके अलावा अपने व दूसरे गांव, स्थानीय बाजार व दलाल/ठेकेदार से अपने उत्पादों की बिक्री करते हैं। हमारे प्रतिदर्श के 80.0 प्रतिदर्श उद्यमियों ने रिंगाल उत्पादों की बिक्री में आने वाली समस्याओ को उजागर किया है, जिसमें यातायात के साधनों का अभाव, स्थानीय गांवों में सिर व पीठ पर लाद कर उत्पादों की बिक्री करना और उचित मूल्य न मिलने की समस्या के साथ-2 क्षेत्र में कहीं भी उत्पाद बिक्री केन्द्र न होने की समस्या बतायी है। जिसके लिये उद्यमी यातायात के साधनों का विस्तार करने, गांव में बिक्री केन्द्र खोलने, सरकार को सहकारी समिति के माध्यम से या स्वयं रिंगाल उत्पाद खरीदने के सुझाव देते हैं। ताकि उनको उत्पादों की बिक्री में होने वाली अनेक कठिनाइयों से निजात मिल सके।

अध्याय-4

रिंगाल उद्योग के विभिन्न उत्पाद व उत्पादन तकनीक

अध्ययन के इस भाग में हमारे उद्यमियों द्वारा किस प्रकार के उत्पाद तैयार किये जाते हैं, गतवर्ष प्रति इकाई द्वारा कितने उत्पाद तैयार किये गये तथा पिछले 5 वर्ष में रिंगाल उद्योग के उत्पादन में वृद्धि व ह्रास की स्थिति के साथ-साथ उत्पादन लागत व तकनीक का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

4.1.1 रिंगाल उद्योग के उत्पाद

सामान्य तौर पर रिंगाल के उद्यमियों द्वारा बनाये जाने वाले उत्पादों को चार भागों में बांटा जा सकता है। जिनका विवरण निम्नवत है।

कृषि सम्बन्धी उत्पाद

कृषि सम्बन्धी उत्पादों में चटाई (मोस्टा) जो कि विभिन्न आकार की होती है। एक महत्वपूर्ण रिंगाल उत्पाद है। उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में फसल के समय अनाज को सुखाने तथा मड़ाई आदि के कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके साथ शादी -ब्याह, जनेऊ संस्कार एवं त्यौहारों के समय मेहमानों के बैठने के लिये इसका उपयोग किया जाता है। फसल की समाप्ति के बाद चटाई को मोड़कर घर में ही सुरक्षित स्थान पर रख दिया जाता है। चटाई के बाद परम्परा के घरों में बैठने के लिये तेहत (चटाई का लघु रूप) का प्रयोग होता आया है लेकिन फसल के समय अनाज को सुखाने में भी इसका उपयोग किया जाता है इसको एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना आसान होता है। कृषि कार्यों के साथ-साथ घरेलू कार्यों में काम आने वाला सूपा रिंगाल उत्पादों में एक विशिष्ट स्थान रखने वाला उत्पाद है जिसका आज के प्रतियोगी, औद्योगिक जगत में अभी तक विकल्प नहीं निकल पाया है। यद्यपि बांस व लोहे के सूपे बनाये जाने लगे है लेकिन परम्परा से बनते चले आ रहे रिंगाल के सूपों का स्थान वे विकल्प नहीं ले पाये हैं। सूपे की तरह टोकरी भी कृषि पशुपालन व अन्य घरेलू कार्यों में काम आने वाला उत्पाद रहा है। जहाँ एक ओर खेतों से अनाज की बालियों को काटकर टोकरी के माध्यम से रिंगाल के बड़े उत्पाद रास्यो (ड्रम के आकार का) में इकट्ठा किया जाता है वहीं गोबर ढोने व घरों में कपड़ों को रखने तथा 6-7 माह से कम उम्र के बच्चों को सुलाने में इसका उपयोग किया जाता है। रास्यों का उपयोग खेतों से गेहूं, मडुवा व मादिरा जैसे अनाज की बालियों को खेतों से घर व खलिहान तक लाने में किया जाता है।

कृषि में अनाज की सफाई करने के लिये छलनी का उपयोग किया जाता है। रिंगाल से विभिन्न प्रकार की छलनियाँ बनायी जाती है जो अनाज के प्रकार के अनुसार बनती है। साधारण तौर पर उत्तराखण्ड के कृषकों द्वारा गेहूं की बालियों को काटकर खेतों से खलिहानों में लाया जाता है खेतों में गेहूं की बालियों को रिंगाल के डण्डों (स्यावड़) से इकट्ठा कर काटा जाता है जिससे बालियां काटने में जल्दी होती है। बरसात के मौसम में उत्तराखण्ड के कृषकों विशेषकर महिलाओं द्वारा पानी से बचाव के लिये छाते की जगह मौण का प्रयोग किया जाता है। कृषि कार्य को एक हाथ से छाता पकड़कर कर करना सदैव मुश्किल कार्य है इसलिये छाते के विकल्प के रूप में मौण का विशेष महत्व है जो मोलपत्र व अन्य पत्तियों से बने होते है लेकिन पत्तियों को रिंगाल के जाल में पिरोया जाता है। खेतों की जुताई के समय जब कृषक अपने बैलों को फसल वाले खेतों से इधर उधर ले जाते हैं तो बैल फसल का नुकसान कर देते है। अतः फसल के बचाव के लिये बैलों के मुंह पर रिंगाल के मोंव (जाली) लगाये जाते हैं। यद्यपि हमारे चयनित उद्यमियों ने खेतों में बीज छिड़कने का बर्तन (फौंकटा) नहीं बनाये है लेकिन कृषि में काम आने वाला उत्पाद फौंकटा भी चयनित गांवों के उद्यमियों द्वारा बनाये जाते हैं।

2. पशुपालन सम्बन्धी उत्पाद

सामान्यतः टोकरी एक ऐसा उत्पाद है जो घरेलू पशुपालन व कृषि के कार्यों में लाया जाता है लेकिन रिंगाल के पशुपालन सम्बन्धी उत्पाद अलग से भी बनाये जाते है जिसमें आंखिया डोका (खरगिया डोका या कण्डल) मुख्य उत्पाद हैं। जहाँ आंखियां डोका का उपयोग स्त्रियां जंगल से या अपने खेतों से घास काटकर लाने व बच्चों का पालना बनाने में करती हैं वहीं दूसरी ओर कण्डल का उपयोग जंगल से सूखी पत्तियों (जानवरों का बिछौना) लाने के लिये किया जाता है। खरगिया डोका का उपयोग बरसात के मौसम में ग्रामीण परिवारों द्वारा जानवरों को बांधने की रस्सियां लाने व ले जाने, चक्की पीसने व गोबर की ढुलाई में किया जाता है। खेतों में गोबर ढोने के लिये पुरोलिया डोका भी चयनित गांवों के उद्यमी बनाते हैं।

3. घरेलु उपयोग सम्बन्धी उत्पाद

घरों में उपयोग किये जाने वाले उत्पादों में छापर व भाट (छोटी परात व भाड़)बड़ी परात के आकार का) दैनिक उपयोग वाले उत्पाद है जहाँ छापर(छोटी परात) उपयोग रोटी सेकने के बाद रोटी रखने के लिये किया जाता है वहीं भाड़ का उपयोग प्रतिदिन कूटे जाने वाले धानों को सुखाने व चक्की पीसने वाले अनाज को सुखाने के काम में होता है। पिरा (2 किलो अनाज की माप वाला उत्पाद) का उपयोग अनाज बेचने, खरीदने तथा सांस्कृतिक कार्यों में अनाज की माप करने के लिये किया जाता है जबकि माणा (एक पाव अनाज की माप) दैनिक भोजन बनाते समय चावलों या आटे की माप करने के लिये उपयोग में लाया जाता है।सामान्यतया जिन घरों में ऊन की कताई बुनाई का कार्य किया जाता है, उन परिवारों द्वारा ऊन के कारोबार में उपयोग होने वाले औजारों व ऊन को रखने का कार्य रिंगाल की कण्डी (बाल्टी) में किया जाता है इसके अलावा विभिन्न मौसमी फलों एवं सब्जियों को भी रिंगाल की कण्डी में रखा जाता है। रिंगाल से बनाते वाली छोटी टोकरी का इस्तेमाल अधिकांशतः लड़कियां शादी के बाद अपने मायके व ससुराल जाने में करती हैं जिसमें वे अपने कपड़ों व कलेवा आदि को रखती हैं।

पिटारा (अटैची) का उपयोग कपड़ों को रखने में किया जाता है और टुप्पर (कुरूवा) का उपयोग मडुवा, मसूर व गेहूं का आटा रखने के साथ-साथ रोपाई के समय धान के बीजों का अंकुर निकालने के लिये किया जाता है। झाड़ू व टोप का उपयोग देश के अन्य भागों में बने उत्पादों की तरह किया जाता है।

4. अन्य उत्पाद

जहाँ कृषि पशुपालन व घरेलू उपयोग में आने वाले अनेक रिंगाल उत्पादों को हमारे पर्वतीय उद्यमियों द्वारा तैयार किया जाता है वहीं दूसरी तरफ पर्वतीय इकाइयों के अलावा अन्य इकाइयों द्वारा अथवा पर्वतीय विकास खण्ड के उद्यमियों द्वारा रिंगाल के अन्य अनेक उत्पाद बनाये जाते हैं। इनमें से सेकुआ (ड्रम के आकार का) जो कि स्थानीय ग्रामीणों द्वारा अनाज रखने के काम में आता है अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उत्तराखण्ड क्षेत्र में अनाज रखने के लिये लकड़ी के बॉक्स या भकार (बड़े बक्से) का उपयोग किया जाता है लेकिन जंगल कटने के कारण इन उत्पादों को बनाना असम्भव होते जा रहा है अतः उनके विकल्प के रूप में सेकुआ अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

सामान्यतया उत्तराखण्डी लोगों द्वारा देवी देवताओं पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है, उसी के साथ-साथ भूत-प्रेत, मसान या श्मशान आदि पर भी लोग विश्वास करते आये हैं। जहाँ देवी देवताओं की पूजा के लिये रिंगाल उद्यमी रिंगाल का डोला (डोली) बनाते हैं और घर में पूजा के लिये रिंगाल के छोटे-छोटे आसन तैयार करते हैं वहीं मसान व श्मशान कीपूजा के लिये झाड़फूंक की टोकरी (अधूरी बनी हुई टोकरी) बनाते हैं जिसकी आवश्यकता आज के वैज्ञानिक युग में भी ग्रामवासियों को लगातार बनी रहती है। बच्चों को झूलने के लिये पालना तथा वृद्धों को सहारा देने के लिये रिंगाल की लट्ठी (लाठी) को भी रिंगाल से तैयार किया जाता है। इसके साथ-साथ ठण्डे मौसम के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में हुक्का पीने का रिवाज है और चिलम पर रिंगाल की नली (पाईप) लगायी जाती है और चिलम को चारों तरफ घुमाकर रिंगाल की नली के माध्यम से लोग तम्बाकू पीते है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर जब क्रिया काण्ड किया जाता है तो मृतक व्यक्ति के सगे सम्बन्धी रिंगाल के डण्डे पर सफेद कपड़ा बांधकर क्रिया काण्ड के लिये तेहरवीं तक क्रिया घाट जाते हैं। गर्मी के दिनों में जब चारे की समस्या रहती है तो स्थानीय लोग रिंगाल के पत्तों को चारे के रूप में जानवरों को खिलाते हैं। ग्रामीण लोग जब जानवरों को बरसात के मौसम में जंगलों को ले जाते हैं तो वहाँ अस्थायी गौशाला व अपने लिये लोग छप्पर बनाते हैं जो अधिकतर रिंगाल के बने होते हैं।

उत्तराखण्ड में शादी ब्याह के अवसरों पर निशान (झण्डे) ले जाने की परम्परा है, जिसमें कपड़ों के झण्डों को रिंगाल के डण्डों पर लगाया जाता है। स्थानीय सरकारी और अर्धसरकारी कार्यालयों में कूड़ादान के लिये प्लास्टिक के उत्पादों का उपयोग किया जाता था लेकिन अब रिंगाल के कूड़ादान इनका स्थान लेने लगे है। पर्वतीय विकास खण्ड में रिंगाल के विभिन्न उत्पादों को बनाने व उनमें निरन्तर सुधार की प्रक्रिया में लगे एक मास्टर क्राफ्टमैन द्वारा रिंगाल के कुर्सी मेज बनाने का कार्य सुचारु रूप से किया जा रहा है यद्यपि कुर्सी मेज बनाने में अभी अन्दर से लकड़ी का इस्तेमाल

किया जा रहा है इसके अलावा कॉफटमैन को मकान का माडल, लैम्पसेड व कप-गिलास जैसे माडलों के माध्यम से रिगाल के उत्पादों को आधुनिक स्वरूप देने में संलग्न पाया गया है। कुल मिलाकर कृषि, पशुपालन, घरेलू तथा अन्य उपयोग में आने वाले रिगाल के लगभग 35 उत्पाद बनते हैं जो परिवार में बच्चे के जन्म से लेकर लोगों की मृत्यु तक उपयोग में लाये जाते हैं।

4.1.2 रिंगाल उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि व ह्रास की प्रवृति

हमारे चयनित सभी गाँवों के उद्यमियों द्वारा जो भी रिंगाल उत्पाद बनाये जाते है उनमें लगभग सभी उत्पादों के उत्पादन में ह्रास की प्रवृति देखी गयी है। तालिका संख्या 4.1 (क) में कृषि सम्बन्धी उत्पादों की संख्या को दर्शाया गया है तालिका से ज्ञात होता है कि विगत 5 वर्षों में मोस्टों (चटाई) के उत्पादन में 42.0 प्रतिशत तथा सूपों के उत्पादन में 39.0 प्रतिशत की कमी देखी गयी है, इसी प्रकार टोकरी तथा छलनियों के उत्पादन में क्रमशः 40.0 प्रतिशत, 44.0 प्रतिशत व 46.0 प्रतिशत का ह्रास हुआ है। उत्पादन में ह्रास के कई प्रमुख कारण अध्ययन के समय सामने आये जिनमें से सबसे प्रमुख कारण गतवर्ष से चयनित गाँवों की वनपंचायत व दूसरे गाँवों की वन पंचायतों में रिंगाल का फूलना (रिंगाल खत्म होने की प्रक्रिया) रहा है जिस कारण चयनित उद्यमी कृषि सम्बन्धी उत्पादों का उत्पादन अधिक मात्रा में करने में असमर्थ रहे। दूसरी तरफ बाजार में रिंगाल के स्थानापन्न उत्पाद आ जाने से प्रतियोगिता में रिंगाल उत्पाद कम टिक पाते है। उदाहरण स्वरूप अनाज को सुखाने व मड़ाई करने के लिये लोग चटाइयों (मोस्टों) की जगह तिरपाल का इस्तेमाल करने लगे हैं और रिंगाल की छलनी व सूपे की जगह लोहे की बनी छलनियाँ व सूपे उनका स्थान लेने लगे हैं। तालिका संख्या 4.1 (ख) में विगत 5 वर्षों में पशुपालन के काम में आने वाले रिंगाल के उत्पादों में हुई वृद्धि व ह्रास की स्थिति को दर्शाया गया है। आमतौर पर घास काटने के लिये अधिकांश डोके का इस्तेमाल किया जाता है जिसके उत्पादन में विगत 5 वर्षों में 31.0 प्रतिशत की कमी आयी है यद्यपि रिंगाल के डोके का वास्तविक विकल्प बाजार में नहीं उपलब्ध है लेकिन ग्रामीण स्त्रियाँ घास काटकर टाट-पट्टी में बाँधकर लाने को वरीयता देने लगी है क्योंकि जंगल की तरफ जाने में वे खाली डोके के वजन की तुलना में टाट-पट्टी जिसका वजन निम्नतमनहीं होता है को महत्व देती है। खरगिया डोका व कण्डल का बाजार में कोई विकल्प नहीं है और न ही इन उत्पादों की माँग कम है वरन् रिंगाल के उत्पादन में कमी होने से इन उत्पादों का उत्पादन पिछले 5 वर्षों में घट गया है।

तालिका संख्या 4.1 (ग) में विगत 5 वर्षों में रिंगाल के विभिन्न घरेलू उत्पादों के उत्पादन की स्थिति को दर्शाया गया है। यद्यपि कण्डी, पिटारा, झाड़, टुप्पर व झाड़ू के विकल्प बाजार में आ चुके हैं। आज बाजार में कण्डी की जगह प्लास्टिक की बाल्टी व कण्डी, पिटारे की जगह लोहे के बॉक्स व विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक की अटैचियाँ, झाड़ की जगह तिरपाल, टुप्पर की जगह लोहे के कनस्तर व डिब्बे तथा रिंगाल के झाड़ू की जगह सींक वाले झाड़ू बाजार में उपलब्ध हैं लेकिन रिंगाल के उत्पाद सस्ते व टिकाऊ होने के कारण बाजार में अपनी साख बनाये हुए हैं। हमारे प्रतिदर्श में कुल मिलाकर रिंगाल के उत्पादन में कमी होने व कुछ उत्पादों के बाजार में विकल्प आने से विभिन्न उतपादों की संख्या में कमी देखी गयी है।

तालिका संख्या 4.1 (क)
सन् 1992 व 1997 में बनाये गये कृषि सम्बन्धी उत्पादों की संख्या

उत्पादों का मूल्य		सूरी	खलपट्टा मिकिला	लाहुर	हरकोट	खलभूनी	कुल
1. चटाई 6x71/2	1992	180	200	62	300	310	1052
	1997	100	150	20	110	157	537
2. चटाई 6x6	1992	150	235	90	210	230	915
	1997	73	135	45	220	120	593
3. तेहत 3x4	1992	57	40	10	30	50	187
	1997	13	20	8	16	22	79
4. सूपा	1992	181	1630	109	318	755	2993
	1997	86	1155	33	165	363	1802
5. टोकरी	1992	115	115	168	191	89	678
	1997	41	62	85	144	74	406
6. राल्लों	1992	43	90	104	186	85	508
	1997	18	35	47	126	55	281
7. छलनी	1992	30	96	21	39	99	285
	1997	13	57	7	25	51	153
8. स्याठ	1992	40	200	25	100	150	515
	1997	20	100	10	50	100	280
9. मौज	1992	14	10	6	18	15	63
	1997	7	5	4	5	14	35
10. मौंज	1992	4	–	13	10	8	35
	1997	20	–	6	12	16	54

तालिका संख्या 4.1 (ख)

सन् 1992 व 1997 में बनाये गये पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों की संख्या

उत्पादों का नाम	वर्ष	सूपी	खलपट्टा मिकिला	लाहूर	हरकोट	खलभूनी	कुल
1. खरगिया डोका	1992	221	1345	135	650	760	3111
	1997	143	850	60	449	445	1947
2. अंखियां डोका	1992	145	–	83	216	–	444
	1997	88	–	39	176	–	303
3. कच्चल	1992	–	10	7	10	30	57
	1997	–	5	7	8	12	32

तालिका संख्या 4.1 (ग)

सन् 1992 व 1997 में बनाये गये घरेलु उपयोग सम्बन्धी उतपादों की संख्या

उत्पादों का नाम	वर्ष	सूपी	खलपट्टा मिकिला	लाहूर	हरकोट	खलभूनी	कुल
1. छाप्पर	1992	129	183	240	15	75	650
	1997	68	103	71	12	48	302
2. कण्डी	1992	70	50	5	82	84	291
	1997	25	38	–	49	56	168
3. छोटी टोकरी	1992	–	–	–	68	31	99
	1997	–	–	–	60	20	80
4. पिटारा	1992	–	38	–	–	–	38
	1997	3	24	–	–	–	27
5. टूपर	1992	50	–	53	–	–	103
	1997	22	–	16	–	–	38
6. सिंग/माणा	1992	3	–	15	–	12	30
	1997	2	–	6	–	5	13
7. माड़	1992	15	–	12	–	–	27
	1997	3	–	4	–	–	7
8. टोप	1992	15	42	21	2	83	163
	1997	10	12	10	2	59	93
9. झाड़ू	1992	–	900	15	1735	–	2650
	1997	–	600	5	1278	–	1883

तालिका संख्या 4.2

सन् 1992 व 1997 में बनाये गये रिंगाल उत्पादों के उत्पादन मूल्य में वृद्धि व ह्रास की स्थिति

उत्पाद	कुल उत्पाद मूल्य		प्रतिशत वृद्धि/ह्रास
	1992	1997	
1. कृषि सम्बन्धी	573515	588893	+ 2.7
2. पशुपालन सम्बन्धी उत्पाद	36621	46503	+ 27.0
3. घरेलू उपयोग सम्बन्धी उत्पाद	31915	33985	+ 6.5
कुल	642051	669381	+ 4.3

तालिका 4.3 (क)

सन् 1992 व 1997 में कृषि के लिये निर्मित रिंगाल के प्रति उत्पाद का मूल्य (रुपया में)

उत्पादों का नाम		सूपी	खलपट्टा गिंकिला	लाइर	हरकोट	खलभूनी	कुल
1. चटाई(6x 71/2)	1992	241	232	250	235	240	238
	1997	415	410	401	440	450	428
2. चटाई(6x 6)	1992	220	230	240	232	220	227
	1997	400	380	395	405	425	402
3. तेहल (3x4)	1992	134	130	140	135	125	133
	1997	223	225	215	250	200	222
4. सूपा	1992	15	16	17	20	21	17
	1997	33	37	31	34	40	37
5. टोकरी	1992	15	25	15	25	22	20
	1997	30	32	29	32	38	32
6. राब्यो	1992	35	37	30	40	40	36
	1997	45	55	43	62	55	55
7. छलनी	1992	16	16	24	15	14	16
	1997	34	28	45	27	24	28
8. स्यांठ	1992	5	2	5	3	2	3
	1997	8	4	6	6	5	5
9. मौण	1992	25	25	30	20	22	23
	1997	50	48	52	48	45	48
10. मॉव	1992	5	–	8	7	8	8
	1997	10	–	12	14	10	12

यद्यपि रिंगाल के अधिकतर उत्पादों की संख्या में पिछले 5 वर्षों में ह्रास की प्रवृत्ति देखी गयी है लेकिन स्थानीय बाजार में रिंगाल उत्पादों की मांग बनी रहने के कारण रिंगाल के उत्पादों के कुल मूल्य में पिछले 5 वर्षों में लगभग 4.0 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। तालिका संख्या 4.2 को देखने से ज्ञात होता है कि पिछले 5 वर्षों में जहां पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों के कुल मूल्य में 27.0 प्रतिशत वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर कृषि व घरेलू उपयोग के उत्पादों के कुल मूल्य में क्रमशः 2.7 प्रतिशत व 6.5 प्रतिशत वृद्धि हुई है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि जहां एक ओर पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों के विकल्प बाजार में कारगर नहीं हो पाये हैं वहीं दूसरी ओर अन्य उत्पादों के विकल्प बाजार में उपलब्ध होने पर भी रिंगाल उत्पादों की मांग बनी हुई है।

तालिका संख्या 4.3(ख)

सन् 1992 व 1997 पशुपालन के लिये निर्मित रिंगाल के प्रति उत्पाद का मूल्य (रुपये में)

उत्पादों के नाम		सूपी	खलपट्टा मिंकिला	लाहुर	हरकोट	खलमूनी	कुल
1. खरगिया डोका	1992	12	10	9	10	10	10
	1997	24	20	16	23	20	21
2. ओखिया डोका	1992	15	–	9	8	–	11
	1997	20	–	15	15	–	16
3. कच्यल	1992	–	11	12	13	10	11
	1997	–	22	25	24	25	24

तालिका संख्या 4.3 (ग)

सन् 1992 व 1997 में घरेलू उपयोग के लिये निर्मित रिंगाल के प्रति उत्पाद का मूल्य (रुपये में)

उत्पादों का नाम		सूपी	खलपट्टा मिंकिला	लाहुर	हरकोट	खलमूनी	कुल
1. छापर	1992	9	4	7	6	6	7
	1997	19	15	15	15	15	16
2. मण्डी	1992	20	20	18	16	13	17
	1997	27	25	–	22	20	23
3. छोटी टोकरी	1992	–	–	–	20	17	19
	1997	–	–	–	25	20	24
4. पिटारा	1992	–	70	–	–	–	70
	1997	60	106	–	–	–	96
5. टूपर	1992	18	–	13	–	–	16
	1997	47	–	19	–	–	35
6. सिंग/माणा	1992	20	–	18	–	17	18
	1997	35	–	30	–	27	30
7. माड़	1992	37	–	35	–	–	36
	1997	50	–	48	–	–	49
8. टोप	1992	10	10	10	10	9	9
	1997	24	25	14	25	17	19
9. फाड़्	1992	–	5	4	5	–	5
	1997	–	11	10	8	–	9

हमारे प्रतिदर्श इकाईयों द्वारा गत वर्ष व पिछले 5 वर्ष पूर्व बनाये गये कृषि, पशुपालन व घरेलू उपयोग सम्बन्धी प्रति रिंगाल उत्पाद की कीमत को तालिका संख्या 4.3 (क ख ग) के माध्यम से दर्शाया गया है। तालिका से ज्ञात होता है कि पिछले 5 वर्षों में जहाँ मोस्टा (चटाई) के मूल्य में 78.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर टाब्बों के मूल्य में 53.0 प्रतिशत व सूपे के मूल्य में दुगने से भी ज्यादा की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार पशुपालन का मुख्य उत्पाद डोके के कीमत में भी 110.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उपयोग का उत्पाद छापर के मूल्य में लगभग 2.5 गुने के बराबर वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर यद्यपि हमारे चयनित उद्यमी पिछले 5 वर्षों में अधिक उत्पाद बनाने में असमर्थ रहे हैं क्योंकि कच्चे माल की अनुपलब्धता इनके व्यवसाय को बढ़ाने में बाधक बनी है जबकि उत्पादों के मूल्य वृद्धि के कारण इनकी कुल आय में तुलनात्मक रूप में वृद्धि हुई है।

4.2.1 रिंगाल के विभिन्न उत्पादों से प्रति परिवार होने वाली आय का अनुमान

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि रिंगाल के कारोबार में हमारे चयनित प्रति परिवार से लगभग 2 व्यक्ति से अधिक लोग रिंगाल के कार्य में लगे हुए हैं और पारिवारिक आय में रिंगाल के कारोबार का योगदान लगभग 37.0 प्रतिशत है। अब हमें यह जानना भी आवश्यक है कि क्या रिंगाल का कारोबार एक लाभप्रद व्यवसाय हो सकता है। इसके लिये हमें रिंगाल (कच्चे माल) का मूल्य व यदि रिंगाल के कार्य में लगे पारिवारिक सदस्य रिंगाल के कार्य में नहीं लगे होते तो अन्य किन कार्यों में लगे होते और उससे क्या आय होती? अर्थात् रिंगाल के कार्य में लगे पारिवारिक सदस्यों को आरोपित मूल्य देकर उत्पाद बिक्री लागत व अन्य व्यय से अनुमानित करने का प्रयास किया गया है।

हमारे चयनित प्रतिदर्श के प्रति परिवार द्वारा 1785 रुपये का रिंगाल प्रतिवर्ष अपने वन पंचायत व दूसरे गांवों की वनपंचायत से खरीदा जाता है इसके अलावा रिंगाल खेतों में उगाये रिंगाल से भी उत्पाद बनाते हैं रिंगाल के उत्पाद को बनाने के लिये कुन्चे व घिंघारू की लकड़ी को इस्तेमाल भी किया जाता है उसको उद्यमी स्वयं जंगल से काट लाते हैं रिंगाल उत्पाद बनाने में प्रति कारीगर के दिनों में लकड़ी लाने के दिनों को भी सम्मिलित किया गया है।

हमारे प्रतिदर्श के उद्यमियों द्वारा जब अपने उत्पादों को दूसरे व दूर के गांवों में या मेले, त्यौहारों अथवा स्थानीय बाजारों में बिक्री की जाती है तो उसको बसों या ट्रक के माध्यम से बिक्री स्थल तक पहुंचाया जाता है जिसमें हमारे चयनित प्रति उद्यमी परिवार द्वारा 1090 रुपये का यातायात व्यय किया है जो उत्पादन लागत का एक हिस्सा है। इसके अलावा बिक्री के समय छोटे-2 होटलों में रहने, व अपने उत्पादों को रखने का किराया देने तथा अपने खानपान में प्रति परिवार द्वारा 580 रुपया खर्च किया जाता है।

जहां कच्चामाल व बिक्री खर्च रिंगाल उत्पाद के मुख्य लागत हैं वहीं दूसरी ओर रिंगाल उत्पाद को बनाने में पारम्परिक कारीगर के रूप में लगे उद्यमियों व कारीगरों के श्रम का मूल्य आंकना भी

आवश्यक है क्योंकि अगर ये पारिवारिक कारीगर रिंगाल उत्पाद बनाने में न लगे होते तो दूसरा कोई अन्य कार्य करके आय अर्जन करते। जैसा कि हमारे चयनित गांव हिमालय के नजदीकी गांव है वहां कृषि एक फसली है और कृषि श्रमिक न होने से रिंगाल में लगे कारीगरो की आय का अनुमान कृषि श्रमिक से लगाना सम्भव नहीं है अतः विकल्प के तौर पर अकृषि श्रमिक की मजदूरी से रिंगाल उद्योग में लगे कारीगर की आय का आंकलन करना तर्कसंगत होगा क्योंकि प्रतिदर्श गांवों में कृषि, रिंगाल उद्योग और अकृषि श्रमिक की मजदूरी ही ग्रामीण लोगों के आय के मुख्य स्रोत है। अतः पुरुष सदस्य की दैनिक मजदूरी 70 रुपये तथा स्त्री सदस्य की दैनिक मजदूरी 55 रुपये जो वर्तमान समय में उन चयनित गांवो में प्रचलित है को आरोपित किया गया है। अकृषि श्रमिक की दैनिक मजदूरी से पुरुष कारीगर को 8470 रुपये की मूल्यांकित आय हो रही है और स्त्री कारीगर को 1650 रुपये की मूल्यांकित आय प्राप्त हो रही है। कुल मिलाकर प्रति उद्यमी परिवार द्वारा बनाये जाने उत्पादों का उत्पादन व्यय 13423 रुपया आता है और प्रति परिवार उत्पादित सकल उत्पादन का मूल्य 16788 रुपया है अर्थात् प्रति उद्यमी परिवार को 3365 रुपये का लाभ होता है। जो हमारे चयनित उद्यमियों द्वारा रिंगाल उद्योग से होने वाले प्रति इकाई औसत आय 3032 रुपये से मात्र 327 रुपये अधिक है। अर्थात् रिंगाल का कारोबार हिमालय के नजदीक बसे गांवो के उद्यमियों के लिये एक लाभप्रद व्यवसाय है।

तालिका संख्या 4.4

रिंगाल उत्पादों से प्रति परिवार होने वाली आय का अनुमान

1.	प्रति परिवार सकल उत्पादन का मूल्य	– 16788
2.	उत्पादन लागत	
	(अ) प्रति परिवार खरीदे गये कच्चे माल (रिंगाल) का औसत मूल्य	– 1705
	(ब) पुरुष श्रमिक का आरोपित मूल्य 121 दिन/प्रतिदिन 70 रुपये	– 8470
	(स) स्त्री श्रमिक का आरोपित मूल्य 30 दिन/प्रतिदिन 55 रुपये	– 1650
	(द) दूसरे गांवों व कस्बो में प्रति परिवार उत्पाद बिक्री में यातायात व्यय	– 1098
	(य) अन्य व्यय	– 500
	कुल व्यय	– 13423

4.2.2 रिंगाल उत्पादों के उत्पादन को बढ़ाने के सम्बन्ध में उद्यमियों के विचार

तालिका संख्या 4.5 में रिंगाल उत्पाद संख्या व रिंगाल उत्पादन को बढ़ाने के सम्बन्ध में हमारे चयनित उद्यमियों के विचारों को दर्शाया गया है। चूंकि हमारे अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि रिंगाल उद्योग एक लाभकारी उद्योग है। इसी कारण हमारे चयनित 98.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उत्पादों के उत्पादन को बढ़ाना चाहते है। अपने उत्पाद व उत्पादन का आकार बढ़ाने के सम्बन्ध में लगभग 68.0 प्रतिशत उद्यमी अपने कारोबार को तीन गुना तक, लगभग 27.0 प्रतिशत उद्यमी दुगुना तथा लगभग 6.0 प्रतिशत उद्यमी अपने रिंगाल के कारोबार को चार गुने तक बढ़ाने के इच्छुक पाये गये हैं।

तालिका संख्या 4.5
रिंगाल उत्पाद व उत्पादन बढ़ाने के सम्बन्ध में उद्यमियों के विचार

	गाँव का नाम	उत्पादन बढ़ाना है		उत्पाद व उत्पादन का आकार			
		हाँ	नहीं	दुगना	तीगुना	चारगुना	कुल
1.	सूपी	10 (100.00)	–	2 (20.00)	5 (50.00)	3 (30.00)	10 (100.00)
2.	सलपट्टा मिकिला	10 (100.00)	–	3 (30.00)	7 (70.00)	–	10 (100.00)
3.	लाहुर	9 (90.00)	1 (10.00)	5 (55.56)	4 (44.44)	–	9 (100.00)
4.	हरकोट	10 (100.00)	–	1 (10.00)	9 (90.00)	–	10 (100.00)
5.	सलभूनी	10 (100.00)	–	2 (20.00)	8 (80.00)	–	10 (100.00)
कुल		49 (98.00)	1 (2.00)	13 (26.53)	33 (67.35)	3 (6.12)	49 (100.00)

टिप्पणी - कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

रिंगाल उत्पादों को निर्मित करने की तकनीक

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि रिंगाल उद्योग एक पारम्परिक उद्योग है। इस उद्योग में जहाँ परम्परा से चले आ रहे उत्पादों का उत्पादन किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर विभिन्न उत्पादों को बनाने के लिये भी पारम्परिक औजारों का प्रयोग किया जा रहा है। हमारे चयनित गाँवों के उद्यमियों द्वारा मुख्यतया दराती, कड़याठ, हबीर व मोंगरा जैसे चार औजारों का उपयोग किया जा रहा है। दराती का कार्य मुख्यतया रिंगाल को छिलने में व कड़याठ (बड़ी दराती) का उपयोग रिंगाल को तथा रिंगाल उत्पादों के उपयोग में आने वाली लकड़ी को काटने में किया जाता है। प्वींर जो कि रिंगाल से ही बनाया जाता है का मुख्य कार्य रिंगाल के डण्डे को चार बराबर भागों में बांटकर उसके फुतरे बनाने का है। मोंगरा मोटे रिंगाल को दो हिस्से करने के बाद समतल करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है।

जहाँ चयनित गाँवों के उद्यमियों द्वारा मात्र दराती, करयाठ, हबीर व मोंगरे का इस्तेमाल किया जा रहा है वहीं विकास खण्ड कपकोट में स्थित एक निजी उत्पादन केन्द्र में मास्टर क्राफ्ट मैन

द्वारा रिंगाल उत्पादों को बनाने के लिये रन्दा, बसूला, रेती, बरमा, साबूर, हथौड़ी, आरी, टॉक्सा (टी आकार) पानी का टब (रिंगाल को भिगोने के लिये) व बाल्टी का इस्तेमाल किया जाता है। चूंकि इस निजी उत्पादन केन्द्र में रिंगाल के फर्नीचर बिना लकड़ी इस्तेमाल करना असम्भव है। इसलिये लकड़ी के कार्य में काम आने वाले औजारों को भी रिंगाल उत्पाद बनाने में इस्तेमाल किया जा रहा है।

साधारणतया चयनित उद्यमियों द्वारा जो औजार उपयोग में लाये जाते है इनमें से दरांती व बारयाठ को उद्यमी या तो बाजार से लोहा खरीद कर लोहार से बनवा लेते हैं या फिर लोहार से ही खरीद लेते है जबकि ब्वीर व लकड़ी के मंगिर को उद्यमी स्वयं अपने हाथ से बना लेते हैं। हमारे प्रतिदर्श शत प्रतिशत उद्यमियों को अभी तक पारम्परिक रिंगाल उत्पाद बनाने के औजारों की खरीद में किसी भी समस्या का सामना करते हुए नहीं पाया गया है।

इस अध्याय के अध्ययन में कुल मिलाकर यह पाया गया है कि हमारे प्रतिदर्श उद्यमियों द्वारा कृषि सम्बन्धी-मोस्टा (चटाई) तेहत, सूपा, टोकरी, राच्यों, छलनी, मौण, मॉव तथा स्याठ, पशुपालन सम्बन्धी-खरगिया डोका, आलिया डोका व कण्डल तथा घरेलू उपयोग सम्बन्धी छापर, कण्डी, छोटी टोकरी, पिटारा, टपर, सिम-भाणा, भाड़, टोप व भाड़ू जैसे अनेक उत्पाद रिंगाल से बनाये जाते हैं जबकि चयनित उद्यमियों के अलावा विकास खण्ड के अन्य गांवों में सेठुआ फौंकटा, देवी देवताओं की डोली भाड़-फूंक की टोकरी, निशान के डण्डे, तम्बाकू पीने की नली, बच्चों का पालना, कूड़ादान, मकान का माडल, लैम्पशेड, कप और गिलास जैसे अनेक उत्पाद तैयार किये जाते हैं। कुल मिलाकर चयनित विकास खण्ड के उद्यमियों द्वारा रिंगाल के लगभग 35 उत्पाद बनाये जाते है।

अध्ययन में यह भी पाया गया है कि विगत 5 वर्षों में कृषि पशुपालन व घरेलू उपयोग के लिये बनाये गये उत्पादों की संख्या में ह्रास की प्रवृति देखी गयी है जिसके लिये विगत दो वर्षों से रिंगाल का फूलना (डील आना या रिंगाल खत्म होने की प्रक्रिया) तथा बाजार में रिंगाल उत्पादों के स्थानापन्न उत्पादों का आना रहा है। यद्यपि विगत 5 वर्षों में रिंगाल के उत्पादों की संख्या में ह्रास की प्रवृति देखा गयी है लेकिन उत्पादों की मांग बनी रहने के कारण उनके मौद्रिक कुल मूल्य में लगभग 4.0 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। कृषि पशुपालन व घरेलू उपयोग सम्बन्धी उत्पादों के कुल मूल्य में हुए परिवर्तन को देखने से ज्ञात होता है कि जहां कृषि सम्बन्धी उत्पादों के मूल्य में 2.7 प्रतिशत व घरेलू उपयोग के वस्तुओं के मूल्य में 6.5 प्रतिशत वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों के मूल्य में 27.0 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है इसका कारण पशुपालन के उपयोग वाले रिंगाल उत्पादों का विकल्प न होना रहा है।

हमारे चयनित प्रति उद्यमी परिवार के लगभग 2 कारीगरों को रिंगाल के उत्पाद बनाने में रोजगार मिला हुआ है और कुल पारिवारिक आय में रिंगाल उद्योग से लगभग 37.0 प्रतिशत आय प्राप्त हो रही है। कच्चे माल की खरीद व रिंगाल उत्पाद बिक्री में आने वाले खर्चे रिंगाल उत्पादों

की मुख्य लागत है जबकि रिंगाल उत्पाद को बनाने में पारिवारिक उद्यमी का श्रम इसमें सम्मिलित नहीं किया गया है। हमारे अध्ययन मे पारिवारिक श्रमिक के मूल्य को अकृषि श्रमिक की मजदूरी से आरोपित किया गया है क्योंकि हिमालय क्षेत्र से जुड़े होने व कृषि श्रमिक चयनित गांवों में उपलब्ध न होने और कृषि शुद्ध आय से रिंगाल उद्यमी के मजदूरी की गणना करना सम्भव नहीं है क्योंकि कृषि एक फसली है। अतः वर्तमान समय में पुरुष श्रमिक की दैनिक मजदूरी 70 रुपया प्रतिदिन तथा स्त्री श्रमिक की दैनिक मजदूरी 55 रुपया जो प्रचलन में है को आरोपित किया गया है। अकृषि श्रमिक की दैनिक मजदूरी से पुरुष कारीगर को 8470 रुपये व स्त्री कारीगर को 1650 रुपये वार्षिक मूल्यांकित आय प्राप्त हो रही है अतः कुल मिलाकर प्रति परिवार द्वारा बनाये जाने वाले उत्पादों का उत्पादन व्यय 13325 रुपया आता है और प्रति परिवार सकल उत्पादित मूल्य 16788 रुपया है अर्थात् रिंगाल के कारोबार से प्रति परिवार को 3463 रुपये का लाभ होता है। अर्थात् हिमालय क्षेत्र में रिंगाल का कारोबार एक लाभकारी व्यवसाय है।

रिंगाल उद्योग स्थानीय उद्यमियों के लिये लाभ का व्यवसाय होने के कारण ही हमारे प्रतिदर्श के 98.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल के उत्पादन को बढ़ाना चाहते हैं जिसमें से 68.0 प्रतिशत उद्यमी तीन गुना, लगभग 6.0 प्रतिशत उद्यमी चार गुना तथा शेष उद्यमी अपने कारोबार को दो गुना तक बढ़ाने को तत्पर है।

जहाँ तक उत्पादन की तकनीक का प्रश्न है हमारे चयनित उद्यमी रिंगाल के उत्पादों को बनाने में पारम्परिक औजारों जैसे दराती, बरयाठ (बड़ी दराती) प्वीर व मौंगरा का उपयोग कर रहे हैं जबकि विकास खण्ड के मास्टर क्राफ्टमैन द्वारा बढ़ई के कारोबार में काम आने वाले औजारों का भी प्रयोग किया जा रहा है।

अध्याय -5

निष्कर्ष व सुझाव

भारत वर्ष के 547722 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले हिमालय क्षेत्र में कुल 59924 आबाद गांवों व 345 नगरों में कुल 3,77,80,370 लोग निवास करते है जो भारत की जनसंख्या व क्षेत्रफल का क्रमशः 4.5 प्रतिशत व 16.7 प्रतिशत है। भारत के हिमालयी क्षेत्र की जनसंख्या में विगत एक शताब्दी में लगभग 5 गुने की वृद्धि हुई है और इस बढ़ती जनसंख्या का भार कृषि में ही अधिक पड़ा है। भारत वर्ष के सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र की तरह उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र जो आज उत्तरांचल व उत्तराखण्ड के नाम से विख्यात हो गया है, में भी कृषि ही लोगों के रोजगार का मुख्य साधन बना है। आज कृषि उत्तरांचल क्षेत्र में एक कृषक को वर्ष में मात्र 6-7 माह रोजगार व दो-तिहाई अनाज की आपूर्ति करने में सक्षम है और अनाज की भरपाई उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों से हो रही है।

यह अधिकतर बुद्धिजीवियों से प्रमाणित हुआ है कि उतरांचल में कृषि विकास की सम्भावनाएं नगण्य है और बड़े व मध्यम उद्योगों को आवश्यक अवस्थापनाओं की न्यूनता, स्थानीय साहसियों की कमी व उनके प्रबन्धकीय ज्ञान का अभाव, कच्चेमाल की अनुपलब्धता, वित्तीय समस्यायें तथा पर्यावरणीय खतरो के कारण उत्तराखण्ड के पर्वतीय सम्भाग में स्थापित करना सम्भव नहीं है। कृषि बड़े व मध्यम उद्योगों की सम्भावना कम होने पर भी यह उत्तरांचल क्षेत्र का सकारात्मक पहलू है कि वहां की ठण्डी जलवायु, धूल रहित वातावरण और शहरीय कोलाहलपूर्ण जीवन से दूरियां, इस क्षेत्र में लघु एवं कुटीर उद्योगों में विकास की सम्भावनाओं को अपने में समेटे है। परिणामस्वरूप आज उत्तरांचल क्षेत्र में वन, पशुपालन, कृषि, खनन व अनेक इलैक्ट्रॉनिक सम्बन्धी लघु एवं कुटीर उद्योग विद्यमान है।

यह लघु एवं कुटीर उद्योग ही है जो परम्परा से ग्रामीण भूमिहीनों व सीमान्त कृषकों को रोजगार मुहैय्या कराने में अपना विशिष्ट योगदान देते आये हैं। लेकिन आज पारम्परिक उत्पादों को आधुनिक तकनीक से अधिक उत्पादित करने, उपभोक्ताओं के शौक में परिवर्तन आने तथा हस्तकला जैसे उद्योगों में आय अर्जन की क्षमता कम होने के कारण हस्तकला के कारीगर दूसरे व्यवसायों की तलाश में जाने को विवश हो रहे हैं। वर्तमान समय में यदि पारम्परिक हस्तकला जैसे उद्योगों में लगे कारीगरों की तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो एक तरफ पारम्परिक हस्तकला के कारीगर अदृश्य हो जायेंगे वहीं दूसरी तरफ बढ़ती जनसंख्या को वैकल्पिक रोजगार सुलभ कराना दुष्कर कार्य होगा। उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस अध्ययन में उत्तरांचल क्षेत्र में परम्परा से चले आ रहे "रिंगाल उद्योग" का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य - रिंगाल उद्योग में लगे लोगों के सामाजिक व आर्थिक स्थिति का पता लगाना रिंगाल के विभिन्न उत्पादों व उनके उत्पादन की तकनीक, कच्चे माल व बाजार की स्थिति तथा रिंगाल उद्योग की समस्यायें व सम्भावनाओ का विवरण प्रस्तुत करना रहा है।

इस अध्ययन के लिये उत्तराखण्ड के नव सृजित जनपद बागेश्वर के कपकोट विकास खण्ड का चयन किया गया है विकास खण्ड कपकोट के लगभग 85.0 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में संलग्न है जबकि 1.7 प्रतिशत लोग पारिवारिक उद्योग में लगे है। हमारे चयनित गांवों में 80.0 प्रतिशत मुख्य कर्मकर कृषि में तथा 3.0 प्रतिशत मुख्य कर्मकर पारिवारिक उद्योग में लगे है जो इस बात की ओर संकेत करता है कि चयनित गांवों में पारिवारिक उद्योग आज भी रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

हमारे प्रतिदर्श गांवों के 78.0 प्रतिशत उद्यमी अनुसूचित जाति व जनजाति तथा शेष उद्यमी उच्च जाति के हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि यह उद्योग अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय रहा है। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ है कि हमारे कुल चयनित उद्यमियों में से 52.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उद्योग को अपना मुख्य व्यवसाय बनाये है। हमारे चयनित उद्यमियों के परिवार का औसत आकार 5.2 व्यक्ति है और सभी परिवारों के 53.0 प्रतिशत लोग कार्यरत पाये गये। रिंगाल उद्योग में हमारे चयनित प्रति परिवार से लगभग 2 व्यक्ति कार्यरत पाये गये हैं और प्रति पुरुष कारीगर को वर्ष में 121 दिन व प्रति स्त्री कारीगर को 56 दिन रोजगार प्राप्त हुआ है। जहाँ प्रति पुरुष दस्तकार को रिंगाल उद्योग से 1909 रुपया वार्षिक अर्जित करते हुए पाया गया है वहीं स्त्री दस्तकार 850 रुपया वार्षिक रिंगाल से आय अर्जित कर रही है। हमारे चयनित उद्यमियों के द्वारा सभी स्रोतों से अर्जित की जाने वाली आय में रिंगाल उद्योग का योगदान लगभग 37.0 प्रतिशत पाया गया है। रिंगाल के अलावा पशुपालन, कृषि, दुकान, जजमानी अकृषि श्रमिक व पेंशन रिंगाल उद्यमियों के आय के अन्य स्रोत रहे हैं और सभी स्रोतों से प्रति परिवार 8170 रुपया वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।

सामान्यतया हमारे चयनित उद्यमियों द्वारा थो, जमूर व गढ़ रिंगाल का उपयोग विभिन्न उत्पादों को बनाने में किया जा रहा है जिसको स्थानीय उद्यमी अपने गांव की वन पंचायत व दूसरे गांवों की वन पंचायत से प्राप्त कर रहे हैं। हमारे अध्ययन में देखा गया है कि रिंगाल उद्यमियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार कच्चामाल (रिंगाल) उपलब्ध नहीं हो रहा है। स्थानीय उद्यमी दूसरे गांव की वन पंचायत में जाने के लिये रास्ते न होने, रिंगाल छिलने व काटने के लिये मजदूर न मिलने कच्चामाल महंगा होने तथा कच्चे माल को खरीदने के लिये धन की कमी होने जैसी समस्याओं से ग्रसित हैं।

सामान्यतया विभिन्न मौसमों व ऋतुओं में होने वाले मेलों व त्यौहारों में रिंगाल उत्पादों की बिक्री की जाती है। हमारे चयनित उद्यमी अपने गांव, दूसरे गांवों, स्थानीय बाजार तथा दलालों व ठेकेदारों से अपने उत्पादों की बिक्री करते हुए पाये गये। हमारे अध्ययन के लगभग 80.0 प्रतिशत उद्यमी यातायात के साधनों की कमी के कारण सिर व पीठ में बोझ ढोकर ले जाने, उत्पादों की बिक्री के लिये गांव-गांव घूमने, उत्पादों का उचित मूल्य न मिलना तथा उद्यमियों को अपने उत्पादों की बिक्री में काफी धन का अपव्यय करना पड़ता है। बिक्री की समस्या से निपटने के लिये हमारे चयनित उद्यमियों ने - यातायात के साधनों का विस्तार, गांव में बिक्री केन्द्र खोलने सरकार द्वारा स्वयं उत्पाद खरीदने अथवा सहकारी समितियों के माध्यम से रिंगाल उत्पादों की बिक्री का सुझाव दिया है।

हमारे प्रतिदर्श उद्यमियों द्वारा कृषि सम्बन्धी मोस्टा, ढेक्त, सुपा, टोकरी, राच्यो, छलनी, मोग, मांव तथा स्यांठ जैसे रिंगाल उत्पाद बनाये जाते हैं। इसके अलावा पशुपालन के कार्यों में काम आने वाले व घरेलू उपयोग के क्रमशः डोका, खरगिया डोका, कच्यल छाप पर, कण्डी या बाल्टी, छोटी टोकरी, पिटारा, टुप्पर, सिन, माणा, माड़, ठेंग तथा झाड़ू जैसे उत्पाद बनाये जा रहे हैं। कुल मिलाकर हमारे चयनित विकास खण्ड में रिंगाल से बच्चों के पालना (झूला) से लेकर बूढ़ों की लाठी तक लगभग 35 उत्पाद बनाये जाते हैं। हमारे अध्ययन में यह भी पाया गया है कि विगत 5 वर्षों में कृषि, पशुपालन व घरेलू उपयोग में आने वाले उत्पादों की संख्या में कमी आयी है जिसके लिये विगत दो वर्षों से रिंगाल का फूलना (उजड़ना) व बाजार में अनेक विकल्प का आना रहा है लेकिन पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों के कुल मूल्य में 27.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो बाजार में पशुपालन सम्बन्धी उत्पादों के सशक्त विकल्प न आने व स्थानीय बाजार में उनकी मांग बने रहने की ओर संकेत देता है।

हिमालय क्षेत्र के निकटवर्ती गांवों के लिये रिंगाल उद्योग एक लाभकारी व्यवसाय होने के कारण हमारे प्रतिदर्श के 98.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल के कारोबार को बढ़ाने के उत्सुक पाये गये। यद्यपि रिंगाल उत्पादों को बनाने के लिये हमारे चयनित उद्यमियों द्वारा दरांती, बरयाठ, प्वींर व मौंगरे जैसे पारम्परिक औजारों का उपयोग किया जा रहा है और नयी तकनीक का ज्ञान न होने के कारण चयनित उद्यमी उसके उपयोग के सम्बन्ध में मौन पाये गये है।

5.1 उत्तराखण्ड में रिंगाल उद्योग के विकास हेतु उत्तरदाताओं के सुझाव

उत्तराखण्ड क्षेत्र में ऊन उद्योग के बाद रिंगाल उद्योग लोगों के आय अर्जन व रोजगार का एक मुख्य पारम्परिक उद्योग क्षेत्र रहा है। लेकिन स्थानीय कारीगर विशेषकर हिमालय क्षेत्र के निकटवर्ती गांवों तथा अधिक ऊंचाई के गांवों के कारीगर कच्चे माल व उत्पादों की बिक्री की समस्या से ग्रसित रहे हैं और नयी तकनीकी ज्ञान उनके द्वार से मीलों दूर है। अतः रिंगाल उद्यम में लगे कारीगरों के आय व रोजगार की स्थिति में सुधार लाना सकारात्मक होगा क्योंकि हिमालय क्षेत्र में परम् परा से चले आ रहे रिंगाल उद्योग के कारीगरों के रोजगार के अन्य वैकल्पिक व्यवस्था की सम्भावनायें नगण्य हैं। हमारे अध्ययन में जहां अपनी समस्याओं के समाधान के लिये स्वयं उद्यमियों ने अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये वहीं कपकोट विकास खण्ड में ऊन व रिंगाल उद्योग के माध्यम से लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने में संलग्न स्वैच्छिक संगठन "ग्रामोत्थान समिति" के अध्यक्ष, विकास खण्ड के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों को प्रशिक्षण देने वाले मास्टर क्राफ्ट मैन, खण्ड विकास अधिकारी कपकोट तथा अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा शोध अध्ययन के निष्कर्षों के माध्यम से रिंगाल उद्योग के विकास के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव इस भाग में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

तालिका संख्या 5.1 में रिंगाल उद्योग के विकास हेतु उत्तरदाता उद्यमियों के सुझावों को दर्शाया गया है। तालिका से ज्ञात होता है कि हमारे प्रतिदर्श उद्यमियों में से 40.0 प्रतिशत उद्यमियों ने जिन वन पंचायतों में रिंगाल का उत्पादन होता है उन वनों में जाने के लिये पैदल रास्ते बनाने की राय दी क्योंकि रास्ता न होने के कारण जहां रिंगाल के घने जंगलों में लोग भटक जाते हैं वहीं घोड़े व खच्चरों के माध्यम से यदि कोई रिंगाल उद्यमी रिंगाल के पुल्लरों को ढोकर लाने की सोचते हैं तो वे रास्तों के न होने के कारण घोड़ा व खच्चरों का इस्तेमाल नहीं कर पाते। अतः लगभग सभी सुझाव देने वाले उद्यमी जवाहर रोजगार योजना में उपलब्ध होने वाले धन से रिंगाल वनों में जाने के लिये रास्ता बनाने की मांग करते हैं।

हमारे अध्ययन में यह भी पाया गया है कि रिंगाल उद्योग में कार्यरत उद्यमियों को उनकी आवश्यकतानुसार कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पाता है अतः वे लोग अपनी वन पंचायत व गांव में बची सिविल सोयम भूमि में वनीकरण करने की मांग करते हैं। इसके साथ-साथ लगभग 8.0 प्रतिशत उद्यमी अपनी नाप भूमि में या कब्जे वाली बेनाप भूमि में रिंगाल लगाने को उत्सुक देखे गये लेकिन उनके पास धन की कमी रहने के कारण वे लोग अपने नाप खेतों में लगाने में असमर्थ पाये गये इसलिये ये कारीगर अपने कब्जे की भूमि में अनुदान या कर्ज के माध्यम से आर्थिक सहायता की अपेक्षा रखते हैं। ताकि ये लोग स्वयं रिंगाल का उत्पादन कर सकें।

हमारे प्रतिदर्श के 36.0 प्रतिशत उद्यमी रिंगाल उद्योग के विकास के लिये पांच - छः गांवों के मध्य में ऊन उद्योग की तरह उत्पादन व प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की आशा रखते हैं क्योंकि जहां एक ओर लोग प्रशिक्षित होते रहेंगे वहीं दूसरी ओर उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बिक्री से प्रशिक्षण का खर्च भी वसूल होते रहेगा।

हमारे प्रतिदर्श के 14.0 प्रतिशत उद्यमी तकनीकी विकास में सहयोग की आकांक्षा रखते हैं। यद्यपि उद्यमियों से पूछताछ करने में ज्ञात हुआ कि वे अपनी पारम्परिक तकनीक से संतुष्ट है और नयी तकनीक के बारे में उनको ज्ञान नहीं क्योंकि ये लोग अशिक्षित होने के साथ बाहरी दुनियां से अनभिज्ञ है जबकि वर्तमान समय में रिंगाल उद्योग के तकनीकी विकास की शुरुआत हो चुकी है। हमारे प्रतिदर्श के 20 प्रतिशत उत्तरदाता क्रमशः प्रत्येक गांव में बिक्री केन्द्र तथा कच्चे माल को खरीदने के लिये ऋण की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में अपने सुझाव प्रस्तुत करते हैं।

हमारे प्रतिदर्श के 22.0 प्रतिशत उद्यमी जिन गांवों की वन पंचायत द्वारा रिंगाल की नीलामी की जाती है उन गांवों में बाहर के गांवों से कच्चे माल को खरीदने आने वाले लोगों को उस गांव में स्थित या नजदीकी राशन की दुकान से राशन उपलब्ध कराने का सुझाव प्रस्तुत करते हैं क्योंकि जब बाहरी गांव के उद्यमी वन पंचायत के वनों में रिंगाल काटने के लिये जाते हैं तो उनको राशन की समस्या का सामना करना पड़ता है। हमारे प्रतिदर्श के 14.0 प्रतिशत उद्यमी सरकारी जंगल में उगने वाले रिंगाल के निःशुल्क वितरण का भी सुझाव देते हैं क्योंकि रिंगाल को प्रतिवर्ष गन्ने की तरह काटना आवश्यक होता है यदि सरकार रिंगाल वनों से रिंगाल की बिक्री या नीलामी नहीं करती है तो स्थानीय लोगों को अवश्य ही निःशुल्क काटने का अधिकार होना चाहिए वरना प्रतिवर्ष आय व रोजगार सृजन करने वाला बहुमूल्य रिंगाल बिना मूल्य के स्वतः नष्ट हो जायेगा।

तालिका 5.1 : रिंगाल उद्योग विकास हेतु उत्तरदाता उद्यमियों के सुझाव

सुझाव/गांव का नाम	सूपी	ललफट्टा मिकिला	लाहुर	हरकोट	खलमूनी	कुल
1. रिंगाल का वनीकरण	5 (50.0)	2 (20.0)	3 (30.0)	1 (10.0)	3 (30.0)	14 (28.0)
2. रिंगाल वनों में रास्तों की व्यवस्था	6 (60.0)	2 (20.0)	5 (50.0)	4 (40.0)	3 (30.0)	20 (40.0)
3. रिंगाल उगाने हेतु सरकारी सहायता	1 (10.0)	–	2 (20.0)	–	1 (10.0)	4 (8.0)
4. 5-6 गांवों के मध्य में उत्पादन व प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना	6 (60.0)	4 (40.0)	4 (40.0)	1 (10.0)	3 (30.0)	188 (36.0)
5. नयी तकनीक के विकास में सहयोग	1 (10.0)	–	3 (30.0)	1 (10.0)	2 (20.0)	7 (14.0)
6. प्रत्येक गांव में बिक्री केन्द्र की स्थापना	1 (10.0)	2 (20.0)	1 (10.0)	4 (40.0)	2 (20.0)	10 (20.0)
7. कच्चे माल के लिये ऋण की व्यवस्था	2 (20.0)	4 (40.0)	1 (10.0)	2 (20.0)	1 (10.0)	10 (20.0)
8. रिंगाल वन वाले गांवों में राशन की व्यवस्था	3 (30.0)	2 (20.0)	1 (10.0)	3 (30.0)	2 (20.0)	11 (22.0)
9. जंगलों में रिंगाल निःशुल्क उपलब्ध हो	1 (10.0)	2 (20.0)	–	3 (30.0)	1 (10.0)	7 (14.0)
प्रतिदर्श आकार	10	10	10	10	10	10

5.2 उत्तराखण्ड में रिंगाल उद्योग के विकास के सम्बन्ध में अन्य सुझाव

हमारे अध्ययन के पिछले भाग में प्रतिदर्श उद्यमियों के द्वारा दिये गये सुझावों को प्रस्तुत किया गया है इस भाग में सामाजिक कार्यकर्ताओं, ऐच्छिक संगठनों, खण्ड विकास अधिकारी तथा शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर रिंगाल उद्योग के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. रिंगाल उद्योग के विकास के लिये कच्चेमाल को उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण कार्य है, इसके लिये सर्वप्रथम वन पंचायतों में उगने वाले रिंगाल की घेराबन्दी करना आवश्यक है और वन पंचायत के जिस भाग में रिंगाल उजड़ चुका है उन जगहों पर रिंगाल का वनीकरण होना चाहिए। इसके साथ-2 रिंगाल के कारोबार करने वाले जिन गांवों में वन पंचायतें नहीं है उनमें वन पंचायतों का गठन करना चाहिए.

2. रिंगाल के वनों को काटने के बाद जब रिंगाल पुनः उगने लगता है तो उन वनों में जानवरों को चरने के लिये किसी भी हालत में नहीं लगाना चाहिए।

3. यद्यपि अभी तक रिंगाल उद्योग को दलित वर्ग के लोगों का व्यवसाय माना जाता रहा है लेकिन बढ़ती जनसंख्या व रोजगार उपलब्ध कराने के लिये अन्य जाति के लोगों को भी रिंगाल के कारोबार में व्यवहारिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। यद्यपि पैंफ्रक संगठन व विकास खण्ड के माध्यम से इस दिशा में प्रयास किये गये लेकिन इन संस्थाओं का अनुभव रहा है कि प्रशिक्षण में या तो पारम्परिक रूप से कुशल कारीगर भाग ले रहे हैं या फिर प्रशिक्षण के दौरान मिलने वाले वजीफे के लिये लोग भागीदारी निभा रहे हैं। इसके बाद ये प्रशिक्षणार्थी रिंगाल उद्योग से विमुख हो जाते हैं।

4. यह बहुजन से मुखरित हुआ है और हमारे अध्ययन में भी पाया गया है कि रिंगाल के व्यवसाय में अधिकतर दलित लोग लगे हैं लेकिन वन पंचायतों व ग्राम समाज की भूमि पर गांव के उच्च जाति के लोगों का आधिपत्य है अतः रिंगाल उद्योग के विकास के लिये यह न्यायोचित होगा कि ग्राम समाज में उपलब्ध इकामन प्रापर्टीः भूमि को रिंगाल उद्योग के कारीगरों में वितरित किया जाय ताकि ये लोग उस भूमि में रिंगाल का वनीकरण कर अपने उद्योग को बढ़ा सकें।

5. अभी तक जिन वन पंचायतों के द्वारा रिंगाल की नीलामी की जाती है उनके द्वारा रिंगाल को काटने के लिये नीलामी की बोली लगाने वाले को मात्र एक माह का समय दिया जाता है जो काफी कम है क्योंकि एक साथ रिंगाल काटने पर रिंगाल सूख जाता है और कारीगरों को उत्पाद बनाने में कठिनाई के साथ-साथ रिंगाल के टूटने के कारण उत्पादों में भी मजबूती कम होती है अतः वन पंचायतों को रिंगाल काटने के लिये कम से कम तीन माह का समय देना चाहिए।

6. विश्व मानचित्र में पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्धि पाये ग्लेसियर "पिण्डारी ग्लेसियर" विकास खण्ड कपकोट में ही स्थित है जहाँ प्रतिवर्ष देश - विदेश से पर्यटक आते हैं। अतः पर्यटकों की दृष्टि से फैन्सी उत्पादों का उत्पादन करना चाहिये इसके लिये महिलाओं को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। फैंसी उत्पादों के अलावा रिंगाल के उत्पादों को आकर्षक बनाने के लिये रंगों का उपयोग करना भी उचित होगा।

7. उत्तराखण्ड के अधिकतर विद्यालयों में बच्चों के बैठने के लिये जूट की चटाइयों का इस्तेमाल होते रहा है जो एक तरफ कमजोर होते है दूसरी तरफ इन चटाइयों का उपयोग बच्चों के लिये न करके अध्यापक अपने घरों में करते हैं। अतः विकल्प के तौर पर विद्यालयों में रिंगाल के चटाई का इस्तेमाल होना चाहिये और उसमें विद्यालय का नाम अंकित होना चाहिए। कूड़ादान व पूजा के आसन के साथ फल-फूलों के पैकिंग के लिये भी रिंगाल के उत्पादों का उपयोग किया जा सकता है।

8. यद्यपि रिंगाल उत्पादों की बिक्री के लिये प्रत्येक गाँव में बिक्री केन्द्र की स्थापना करना दुष्कर कार्य है लेकिन विकास खण्डों या तहसील स्तर पर जिला खादी ग्रामोद्योग बोर्ड या हस्तकला बोर्ड के माध्यम स्थानीय उद्यमियों के उत्पादों की बिक्री का प्रबन्ध होना चाहिए।

9. सामान्यतया जब स्थानीय उद्यमी दूसरे गांव की वन पंचायत में वैधानिक रूप से रिंगाल को काटकर लाते हैं तो वन विभाग वालों के द्वारा उनको पास दिखाओ या यहां से क्यों ले जा रहे हो करके तंग किया जाता है। अतः इन वनों से गुजरने के लिये लोगों को निःशुल्क पास दिया जाना चाहिए इसके साथ साथ सरकारी वनों से स्थानीय ग्रामीणों को निःशुल्क रिंगाल मिलना चाहिए क्योंकि रिंगाल कटने पर भी अगले वर्ष स्वतः उगने वाली वनस्पति है।

10. उत्तराखण्ड के हिमालय क्षेत्र में रिंगाल उद्योग के विकास की अपार सम्भावनाओं को देखते हुए पूर्वोत्तर भारत के बेंत और बांस उद्योग में जिस तरह तकनीकी विकास हुआ है उसी तर्ज में रिंगाल उद्योग में भी नयी व उच्च तकनीकी का विकास किया जाना चाहिए ताकि स्थानीय उद्यमी पारम्परिक उत्पादों की जगह नये-नये उत्पादों को बाजार में ला सकें।

11. वर्तमान समय में उत्तराखण्ड के जनपद उत्तरकाशी से लेकर जनपद पिथौरागढ़ के धारचूला तक के हिमालयी में निकटवर्ती गांवों के कारीगरों को संगठित करने की महती आवश्यकता है और इन कारीगरों की सहकारी समितियां बनायी जाय और समिति के माध्यम से इन कारीगरों को निम्न ब्याज की दर पर कच्चामाल खरीदने के लिये ऋण की व्यवस्था करनी चाहिये।

12. वर्तमान में उत्तराखण्ड में किन उत्पादों की मांग अधिक है और किन उत्पादों की सम्भावनाएं हैं , के लिये पूरे उत्तराखण्ड में बाजार का सर्वेक्षण करना रिंगाल उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

अंत में रिंगाल को लगाने या वनीकरण करने से जहां स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा वहीं दूसरी ओर भूमि कटाव व भूस्खलन तथा बाढ़ की विभीषिका को रोकने में रिंगाल के वन कारगर साबित होंगे और हिमालय क्षेत्र को पर्यावरणीय समस्या से बचाने में भी सक्षम होंगे।

परिशिष्ट तालिका संख्या -1
हिमालय क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण

राज्य	भौगोलिक क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.	कुल जनसंख्या	आवासीय ग्रामों की संख्या	नगरों की संख्या	जनसंख्या घनत्व
1. जम्मू एवं कश्मीर	222236	7718700	6477	74	76
2. हिमांचल प्रदेश	55673	5111079	16807	50	92
3. उत्तराखण्ड	51125	5874353	15117	62	115
4. सिक्किम	7096	405505	440	8	57
5. पश्चिमी बंगाल (पर्वतीय)	12763	6283614	2712	26	492
6. असम (पर्वतीय)	22184	3294770	5488	15	148
7. अरूणांचल प्रदेश	83743	858392	3257	10	10
8. नागालैण्ड	16579	1215573	1112	9	73
9. मणिपुर	22327	1826714	2035	31	82
10. मिजोरम	21081	686217	721	22	33
11. त्रिपुरा	10486	2744827	856	18	262
12. मेघालय	22429	1760626	4902	12	78
हिमालय क्षेत्र	547722	37700370	59924	345	69

स्रोत : रमेश चन्द्र सिंह तड़ागी आदि पहाड़ 7/8, 1994-95 पृष्ठ 19.20 से उद्धरित ।

परिशिष्ट - तालिका संख्या - 2

हिमालय क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का वितरण (कुल मुख्य काम करने वालों से प्रतिशत)

राज्य	काश्तकार		खेतिहर मजदूर		घरेलू उद्योग		अन्य कार्य करने वाले	
	1981	1991	1981	1991	1981	1991	1981	1991
1. जम्मू कश्मीर	56.85	अनु0	3.49	अनु0	5.30	अनु0	34.36	अनु0
2. हिमालय प्रदेश	68.08	65.19	2.72	3.52	1.84	2.14	27.36	34.79
3. उत्तराखण्ड	62.60	59.38	6.26	6.71	1.58	5.84	29.56	32.96
4. सिक्किम	60.10	58.22	3.31	8.01	1.08	1.75	35.51	52.74
5. पश्चिमबंगाल (पर्वतीय)	37.84	34.66	18.19	18.64	1.56	1.93	42.47	18.83
6. असम (पर्वतीय)	अनुपलब्ध	49.63	अनु0	14.80	अनु0	2.36	अनु0	19.47
7. अरुणाचल प्रदेश	71.26	61.06	2.49	4.98	0.32	0.64	25.93	39.61
8. नागालैण्ड	72.28	68.23	0.81	4.73	0.40	1.51	26.51	39.25
9. मणिपुर	63.60	57.10	4.99	9.28	9.68	7.09	21.73	37.50
10. मिजोरम	70.63	60.89	2.49	3.73	0.85	1.25	26.03	43.94
11. त्रिपुरा	43.29	38.04	24.0	23.53	1.44	1.95	31.27	14.31
12. मेघालय	63.56	56.25	9.98	13.35	0.84	1.00	26.63	36.69
हिमालय क्षेत्र	-	53.72	-	16.00	-	3.00	-	27.28

स्रोत : योगेश चन्द्र शाह आदि, पहाड़ 7/8, 1994-95 पृष्ठ 8 से उद्धरित ।

परिशिष्ट तालिका संख्या - 3

चयनित गांवों में गत वर्ष प्रति इकाई द्वारा बनाये गये उत्पादों की औसत संख्या व विक्रय मूल्य

उत्पाद/गांव का नाम	सूपी	खलपट्टा	मिकिला	लाहुर	हरकोट	खलमूनी	कुल	प्रति उत्पाद विक्रय मूल्य रुपया
1. चटाई (6x71/2 फिट)	10.0	15.0		2.0	11.0	15.7	10.7	428
2. चटाई (6x6 फिट)	7.3	13.5		4.5	22.0	12.0	11.9	402
3. तेहल (3x4 फिट)	1.3	2.0		0:8	1.6	2.2	1.6	222
4. सूपा	8.6	115.5		3.3	16.5	36.3	36.0	37
5. टोकरी	4.1	6.2		8.5	14.4	7.4	8.1	32
6. राम्यॉं	1.8	3.5		4.7	12.6	5.5	5.6	55
7. छलनी	1.3	5.7		0.7	2.5	5.1	3.0	28
8. स्यांठ	2.0	10.0		2.0	5.0	10.0	5.6	5
9. मोंण	0.7	0.5		0.4	0.5	1.4	0.7	48
10. मांव	2.0	–		0.6	1.2	1.6	1.0	12
11. खरगिया डोका	14.3	85.0		6.0	44.9	44.5	38.9	21
12. अंखिया डोका	8.8	–		3.9	17.6	–	6.1	16
13. कच्यल	–	0.5		0.7	0.8	1.2	0.6	24
14. छापर	6.8	10.3		7.1	1.2	4.8	6.0	16
15. कण्डी	2.5	3.0		–	4.9	5.6	3.4	23
16. छोटी टोकरी	–	–		–	6.0	2.0	1.6	24
17. पिटारा	0.3	2.4		–	–	–	0.5	96
18. दुप्पर (कुरुपा)	2.2	–		1.6	–	–	0.8	35
19. सिंग (माणा)	0.2	–		0.6	–	0.5	0.3	30
20. भाड़ (विसाव)	0.3	–		0.4	–	–	0.1	49
21. टोप	1.0	1.2		1.0	0.2	5.9	1.9	19
22. झाड़ू	–	60.0		0.5	127.0	–	37.7	9

संदर्भ सूची

1. रमेश चन्द्र लहानी, रघुवीर चन्द तथा कृष्ण कुमार - हिमालय का जनसंख्या परिदृश्य, पहाड़ 7/8, 1994-95.

2. आर.एस. चलाल - इन्डस्ट्रियल इन्टरप्रिनियोरशिप एण्ड स्मॉल स्केल इन्डस्ट्री, अनमोल पब्लिकेशन (प्रा.), न्यू दिल्ली, 1991.

3. प्रताप सिंह गढ़िया - कृषि क्षेत्र में स्त्री श्रम का योगदान एवं समस्यायें, पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर, 1995.

4. माधव आशीष - एग्रीकल्चरल इकॉनॉमी ऑफ कुमाँयू हिल्स, इन द एडिटेड बुक ऑफ ओ.पी. सिंह : हिमालय नेचर, मैन एण्ड कल्चर, अनमोल पब्लिकेशन, 1989.

5. त्रिलोक सिंह पपोला - प्रोडक्शन ऑफ वूलेन कारपेट्स इन कुमाँयू एण्ड गढ़वाल, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, 1988.

6. आशुतोष जोशी एवं प्रताप सिंह गढ़िया - ए स्टेटिस्टिकल पिक्चर ऑफ उत्तराखण्ड, गिरि विकास अध्ययन संस्थान लखनऊ, 1997.